अमूर्त विचार !

रविन्द्र मरडिया

की कुछ कविताएँ

प्रकाशक
थैंक्यू पब्लिशर्स

प्रतिलिप्यधिकार © रविन्द्र मरडिया, २०२२
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक से लिखित अनुमति के बिना, इस प्रकाशन के किसी भी भाग को किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली सहित, जिसे अब जाना जाता है या आविष्कार किया जाना है, को पुन: प्रस्तुत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है, सिवाय इसके कि एक समीक्षक जो एक पत्रिका, समाचार पत्र या प्रसारण में शामिल करने के लिए लिखी गई समीक्षा के संबंध में संक्षिप्त अंश उद्धृत करना है.

मूल्य : ₹ ४९०.०० सिर्फ

ISBN: xxx xxx xxx xxx xxx xxx

प्रथम संस्करण
भारत में मुद्रित:
सिद्धि प्रिन्टेक, अहमदाबाद.

अमूर्त विचार !

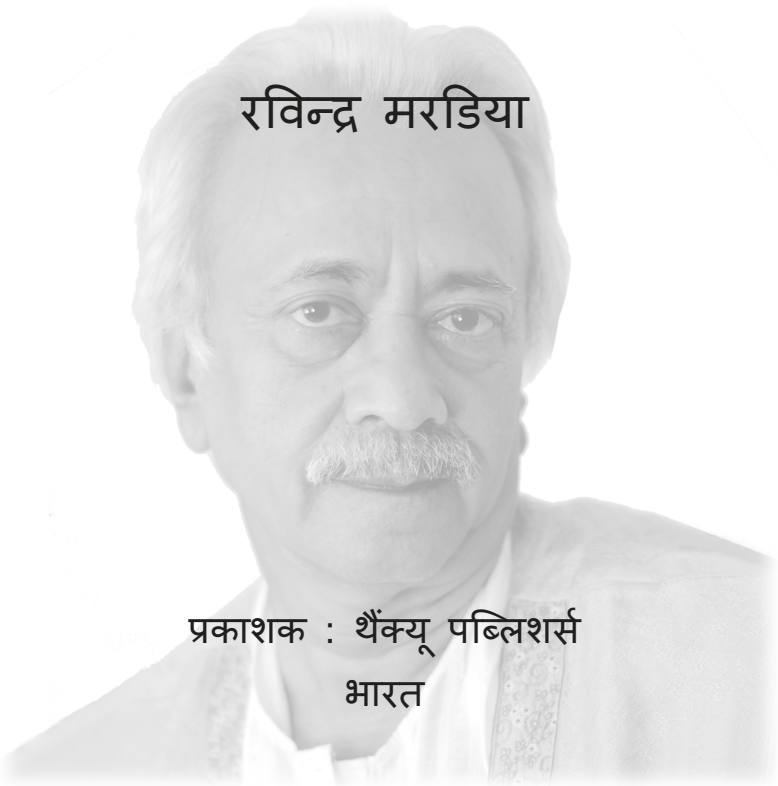

रविन्द्र मरडिया

प्रकाशक : थैंक्यू पब्लिशर्स
भारत

अमूर्त विचार !

समर्पित है

मेरी परम आदरणीय
सहज, सरल, ममतामयी माँ
स्व. श्रीमती गजरा देवी
(बाईजी) को
जिन्हें मैंने
उनके जीवनकाल के दौरान
बहुत तंग किया,
उचित आदर और सम्मान
नहीं दे सका.

प्रस्तावना विष्णु पंड्या के द्वारा

भूमिका

अमूर्त विचार ! मेरी तीसरी पुस्तक प्रकाशित होने जा रही है. पहली दोनों पुस्तकों को बहुत अच्छा प्रतिसाद मिला, इसलिए मेरी यह तीसरी पुस्तक आपके समक्ष प्रस्तुत करने की हिम्मत कर रहा हूँ.

मुझे लगता है की कविताएं लिखने की प्रवृत्ति शायद जन्मजात होती है. मेरी जयेष्ठ बहन शांता दीदी की कविताओं की दो पुस्तकें पहले ही प्रकाशित हो चुकी है. मेरे बड़े भाई साहब का भी एक काव्य संकलन प्रकाशित हो चुका है. कविताएं लिखना हमारे परिवार पर ईश्वर की देन रही है.

“मुझे नहीं पता कि मैं कविता क्यों पढ़ता हूँ, क्यों लिखता हूँ. भाव, विचार इत्यादि कविता के साथ अभिन्न रूप से जुड़े होते हैं, उनके बिना कविता का होना संभव नहीं.

मेरी कुछ कविताएं गद्य रूप में लिखी गई हों ऐसा प्रतीत होता है, मुझे ऐसा लगता है की पद्य और गद्य लेखन के रूप हैं, और कविता इन दोनों रूपों में लिखी जा सकती है. कविता शब्दों, वाक्यों, विरामों, अंतरालों और उनसे पैदा होने वाले भावों, अर्थों और लय के एक विशेष प्रकार के समुच्चय में होती है. दूसरा यह, कि यह समुच्चय पद्य के रूप में भी हो

सकता है, और गद्य के रूप में भी, और इन दोनों रूपों का मिश्रण भी हो सकता है.

कविता शब्दों, वाक्यों और अर्धवाक्यों में होती है. वह उन भावों और अर्थों में होती है, जो चुने गए शब्दों में अंतर्निहित होते हैं. और, उससे भी आगे, जिस तरह से इन शब्दों को विशेष ढंग से जोड़कर, विशेष प्रकार के वाक्य या अर्धवाक्य बनाए जाते हैं. जो भाव और अर्थ इन विशेष प्रकार के वाक्यों, अर्धवाक्यों के इस जुड़ाव से बनते हैं, पैदा होते हैं, वह उनमें होती है.

मेरी कविताएँ भिन्न-भिन्न प्रकार की हैं. कुछ कविताओं में अर्थ ज़्यादा स्पष्ट होते हैं, कुछ में कम. कुछ कविताओं में मैंने अर्थ स्पष्ट कर दिए हैं, और कुछ अमूर्त हैं, जिनका कोई स्पष्टीकरण नहीं है, ताकि पाठक एक से अधिक अर्थ देख सके, ग्रहण कर सके.

कविता में अर्थ अंततः वही होते हैं जो पाठक को समझ में आते हैं, या उसके पल्ले पड़ते हैं. वो नहीं जो मेरे मन में थे या हैं. इसलिए मुझसे यह पूछना बेमानी है कि कविता के अर्थ क्या हैं. वास्तव में कई बार मुझे को ख़ुद भी पूरी तरह

पता नहीं होता कि कविता के अर्थ क्या हैं. मन में जो भाव जगे, उन्हें शब्दों पिरो में दिया.

मुझसे मेरी कविता के अर्थ इसलिए भी नहीं पूछने चाहिए, क्योंकि लिखे जाने के बाद कविता स्वतंत्र हो जाती है, आज़ाद हो जाती है, और वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व बना लेती है. वह मेरी और पाठक से अलग एक तीसरी चीज़ बन जाती है, जो अब मुझसे से जुड़ी हुई नहीं. इसलिए पाठक को अपना रिश्ता सीधा कविता से बनाना चाहिए, तथा अपने और कविता के बीच में से मुझको निकाल दे.

कविता में शब्दों का प्रयोग केवल रसात्मक या कर्णप्रिय अभिव्यक्ति ही नहीं है, बल्कि कविता में पिरोये गए शब्द वो प्रभावशाली और प्रेरक तथ्य है, जो कानों के माध्यम से हृदय को आंदोलित करने की क्षमता रखता हो. जिस भाव की कविता हो, शब्दों के माध्यम से उस भाव को जागृत करने में सक्षम हो. शब्दों के उचित उपयोग के बिना 'कविता' आत्मा विहीन, तुकबंदी के सिवाय और कुछ भी नहीं.

शब्दों का चयन कविता के रूप को पूर्ण और आकर्षक बनाता है. मेरी कल्पना शब्दों के सार्थक और उचित प्रयोग द्वारा ही साकार होती है. कविता में शब्द ही हैं, जो मेरे द्वारा लिखी गई काल्पनिक बात को, वास्तविकता का आभास कराती है.

मेरी कई कविताएं प्रेम और प्यार से ओतप्रोत हैं. प्रेम कविता लिखना यह पता लगाने का एक प्रयास है, कि मनुष्य हजारों वर्षों से क्या जानने के लिए संघर्ष कर रहा है. यह एक अवर्णनीय भावना का वर्णन करने के लिए सही शब्दों को खोजने की कोशिश कर रहा है, अपने मस्तिष्क के शब्दों को अपने दिल की भावनाओं के साथ समेटने के लिए.

जरूरी नहीं, कि प्यार के बारे में उन कविताओं को लिखने के लिए, प्यार होना जरूरी है. और यह भी जानने की जरूरत है कि मेरे द्वारा लिखी गई सभी त्रासदी कविताएं मेरे स्वयं के अनुभव का भी हिस्सा हो सकती हैं. आप देखिए, मैं उनमें से कुछ को पकाने और लिखने की कोशिश करता हूँ, ताकि पढ़ने वाले लोग पूरी बात के विचार से जुड़ सकें.

हमारे अंदर जो प्यार है, वह अद्भुत है - इसने मुझे ऐसा महसूस कराया कि मैं अपनी भावनाओं की चमक और रंगों में जलती हुई आतिशबाजी में कूद सकता हूँ, और यह कभी-कभी संवेदनशील, और असहनीय भी होता है. आतिशबाजी फैल गई, और भावनाओं ने भी ऐसा किया. उसके बाद, यह सिर्फ निराशा है जो पीछा करती है.

रविन्द्र मरडिया

अनुक्रमाणिका

माँ	21
तुम्हारी अनुपस्थिति	22
मैं तुम्हारे लिए	24
टेबल	26
तुम ठीक कह रहे थे	27
हम ईर्ष्या को भूल जाएंगे -	28
संपर्क	30
मेरे देहगाम के फार्म हाउस पर	32
दीप्तिमान-प्रिय	34
मेरा भारत	36
सरदार	38
शनै - शनै	40
आँसू व्यर्थ हैं,	42
समकक्ष	44
कुछ लोग	46
सच्चा प्यार	48
पर्दे	49
जीवन का प्यार	50
मेरे पिता का संस्मरण	54
एक आदमी ने कहा,	56

प्रिय, मैं थक गया हूँ, 59
बंद दरवाज़ा 60
यह दुनिया 63
सपनों का गुलदस्ता 64
समय के अंत तक..... 66
मैं तुमसे मिला था 68
कर्म 70
आबादी घटाने के यही नियम है 72
मातृभाषा 76
दो अंधे आदमी 78
दुख 80
मेरी माँ 81
परी कथा जीवन 82
डर 86
पूर्व 88
प्याज 90
मैं चाहता हूँ 92
एक पल के लिए ही..... 95
मैं वैसा ही हूँ 96
प्रकाश 99
तुम मुझे याद रखोगे 100
अगर युद्ध नहीं होता 102

असामयिक फूल 105
एक साधारण आदमी 106
मदद 108
कोई पता नहीं 110
मैं प्यार करता हूँ 112
एक अधूरा काम 113
आकाश पत्थर नहीं पकड़ सकता 114
सांप का बच्चा 116
एक और मौका 119
अगर तुम भाग्यशाली हो 120
मैं अकेला रहना चाहता हूँ, 122
क्या तुम्हें याद है 124
और यह एक जीवन है 126
मैंने तुम्हें कहाँ खो दिया 128
आपातकाल 130
मेरी स्वतंत्रता 139
प्रिय मां 143

माँ

तुम कहाँ हो,
जिसने मुझे गुलाबी शहर में,
फूलों के बीच जन्म दिया.
जिसने अपने आँचल से
मुझे दूध पिलाया.
मेरे पालने में लोरी, किसने गायी थी ?
मेरी माँ, मैं वर्षों से,
तुम्हारे लिए तरस रहा हूँ.
अब आपकी अनुपस्तिथि महसूस होती है,
मेरे मन को दुखी करती है.
मेरे अंदर का प्यार,
और दुःख कभी नहीं मरेगा,
अपने दिल में, मैंने तुम्हें ही बसाया है.
जीने का सलीका, तुमने ही सिखाया है.
मुझे बोलना भी तुमने ही सिखाया है.
मेरी हर ख्वाइश को,
रंगों से तुमने भर दिया.

मुझे पहले खिलाकर ही, फिर तुमने खाया.
मैं भले नाकामयाब रहा
फिर भी, मेरे होने का,
तुमने अहंकार भरा.
बहुत तकलीफें दीं हैं,
मैंने तुम्हें.
अब क्षमा मांगने से क्या फायदा.
जब नहीं हो, तब
सबसे ज्यादा जरुरत महसूस होती है.

मुझे तुम्हारे बिना,
इस धरती पर रहने की
आवश्यकता क्यों है ?
किसने कहा,
कि मैंने तुम्हारा नाम लेना,
बंद कर दिया है ?
मुझे तुम्हारे बिना,
भगवान या धर्म की,
आवश्यकता क्यों है ?
तुम मेरा ताज हो.

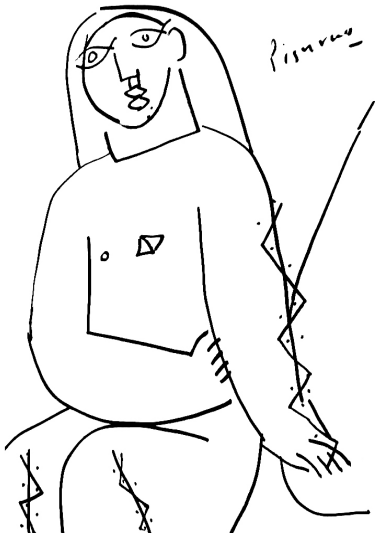

बंद दरवाज़ा

अंदर से दरवाज़ा बंद करके,
कविता लिखना,
मुझे अच्छा लगता है.

मेरे विचार धारा को बाधित करने,
अक्सर दरवाजा खटखटाया जाता है.
मुझे परेशान करने के लिए.
ये सब मेरे अपने हैं.
और कोई नहीं.

उन्होंने अन्य सभी खुले दरवाजों को,
नजर अंदाज कर दिया,
और वे सिर्फ यहां आना चाहते हैं.
ऐसा लग रहा है,
जैसे वे मेरी जासूसी कर रहे हों
अचानक मेरे दिमाग में विचार आता है.
भगवान का शुक्र है,
वे सब मेरे अपने ही तो हैं.

तुम्हारी अनुपस्थिति

यह केवल अकेलापन नहीं है.
भयानक और कड़वी बात है.
हर रात जब मैं लौटता हूँ,
तो महसूस करता हूँ.
अन्य सभी मनोरंजनों के पीछे,
मेरे घर का, शापित मलबा है.
मैं इस कड़वाहट से भर गया हूँ.
मुझे उनसे ईर्ष्या नहीं है,
जो सब अपनों के साथ रहते हैं.

तुम्हारी अनुपस्थिति,
यह सिर्फ अकेलापन नहीं है.
भयानक और कड़वी बात है.
हर रात, मैं अपनी थकी हुई बाँहों को,
नीचे फेंक देता हूँ,
अपने तकिए पर,
सिर ऐसे रखता हूँ, जैसे
ठंडी कब्रों में मुर्दे फेंक दिए जाते हैं.

बर्फ के अपने बिस्तर में,
मैं कुत्ते की तरह चिल्लाता हूँ.

सुबह मेरे पड़ोसी ने,
मुझे बताया, कल रात,
एक कुत्ते ने,
हमारी नींद ख़राब कर दी थी.

मैं उन सभी बातों को,
जानने से नहीं डरता -
कैसे इस लालसा ने मुझे,
कुत्ता बना दिया है.
जल्दी या बाद में,
हर कोई इसका पता लगा लेगा.

तजित, स्वामीहीन कुत्ते पर,
हर कोई पत्थर फेंकता है.

टेबल

तुम मेरे सबसे करीबी दोस्त हो,
मेरे सबसे प्यारे अजीज.
तुम्हारे सम्मुख बैठे हुए,
मैं चुप नहीं रह सकता.

तुम हमेशा मेरे दिल के पास हो.
तुम्हारी कोई जीभ नहीं है.
कोई मुंह नहीं है.
तुम मुझे मौन उत्तर देते हो.
तुम्हें न कागज की जरूरत है,
न कलम की,
क्योंकि तुम्हारे पास,
कहने के लिए
कुछ है ही नहीं.
और न ही तुम्हें विश्लेषण करना है.

कभी-कभी, तुम मौन रहते हो.
जब मुझे, अपने दिल को,

खाली करने के लिए
शब्द नहीं मिलते,
मैं तुम पर बौखला जाता हूँ.
और खुद को बेबस लाचार पाता हूँ.
नाराज़ नहीं होना, मेरे प्रिय,
तुम मेरे सबसे करीबी दोस्त हो,
मेरे सबसे प्यारे अजीज.

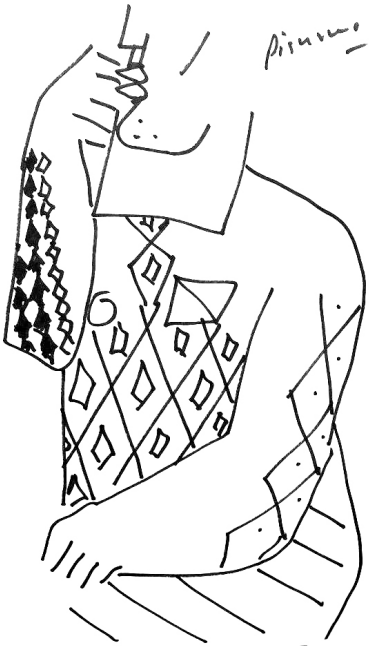

तुम ठीक कह रहे थे

तुम ठीक कह रहे थे.
तुम्हें पता है,
तुम बहुत सही थे.
समय रहते,
सब कुछ निश्चित हो जाना चाहिए था.
जिस पल,
बारिश ने शब्दों को धो डाला.
मेरे लिए रुको,
सड़क पर लिखा था.
पड़ोसी लड़की द्वारा.
जिस पल खिड़की के शीशे,
पड़ोसी लड़की की,
सांसों से धुंधले हो रहे थे.
'मृत्यु तक, मैं प्रतीक्षा करूंगा',
अचानक हवा के झोंके में मिट गया.
समय रुक जाना चाहिए था,
और सारी मानवता,
प्यार और इंसानियत . . . .

तुम्हें पता है,

तुम बहुत सही थे.

समय रहते,

सब कुछ निश्चित हो जाना चाहिए था.

तुम्हें पता है,

तुम बहुत सही थे.

जब तुम ने कहा कि लोग निर्मोही हैं,

जब तुमने कहा,

लोग मुहब्बत से मुँह फेर लेते हैं.

मेरा प्रिय,

एक प्यार का हत्यारा है.

तुम बहुत सही थे.

प्यार तो तब भी,

रुक जाना चाहिए था.

हम ईर्ष्या को भूल जाएंगे -

तुम और मैं,
अपना अहंकार घर पर छोड़ देंगे.

सबसे पहले,
हम दु:ख की ओर चलेंगे.
वह हमारी मुस्कान से भ्रमित हो जाएगा.
वह देखेगा कि इसका कोई घर नहीं है.
हमारी आत्मा में - यह शाश्वत अतिथि,
दु:ख, हमेशा के लिए हमें छोड़ देंगे.

फिर, हम धागा उधार लेंगे.
सूरज से,
और हमारे लाल, लाल कपड़ों पर कढ़ाई करेंगे.
सुनहरी जरी के साथ.
हम पंख प्राप्त करेंगे,
और उड़ने का प्रबंधन करेंगे.
प्रसन्न होंगे, बारिश के लिए.
अपने पंख फड़फड़ाने के लिए.

सूरज को एक पलक देखने के लिए.
ऐसी बातें, केवल हमारे साथ घटित होंगी.
जिसकी हम कभी,
कल्पना भी नहीं कर सकते थे.
तुम दुनिया की सबसे सुंदर महिला हो.
लोग कहेंगे.

आह, हम प्यार करेंगे, हम विश्वास करेंगे.
जानबूझकर हम नहीं पूछेंगे,
क्या तुम ने दुनिया की,
सभी महिलाओं को देखा है ?
निस्संदेह कोई मिल सकता है.
जो स्वतंत्र हैं, खुश,
केवल वे जो खुश हैं.
खुशी पैदा कर सकते हैं.

लेकिन, ओह !
फिर भी हम प्यार करेंगे.
और फिर भी हमें प्यार किया जाएगा.
पागलों की तरह.

संपर्क

हाल ही में मिलाये किए गए,
नंबरों की सूची में,
तुम्हारा का नाम नीचे उतरता है.
धीरे-धीरे, धीरे-धीरे . . .
इस तरह प्यार को,
भुला दिया जाता है.

तुम्हें हटा दिया गया है,
फेसबुक पर करीबी दोस्तों की सूची से.
मैं अब नहीं देखता,
कि तुम वहां क्या लिखते हो.
क्या करते हो.
अधिक समय बीत जाता है,
हम अब करीब नहीं हैं.
तुम अपना पासवर्ड बदल देते हो,
और मेरा,
तुम पर से विश्वास उठ जाता है.

शाम को,
हम शहर के, कॉफ़ी हाउस में चाय पीते हैं.
उन लोगों के साथ,
जिन्हें हमने वर्षों में नहीं देखा है.
मैंने तुम्हारे द्वारा मना किए गए,
कपड़े पहन रखे हैं.
मैं तुम्हें माफ नहीं करता,
प्यार पर विजय पाने के लिए.
तुमने खुद को,
दुखों से रंग लिया है.

मेरे फोन पर एक मैसेज आता है,
मुझे पता है, कि
यह तुम नहीं हो सकते.
फिर भी,
मैं इसे खोलता हूँ.
बस, शायद यह तुम हो.

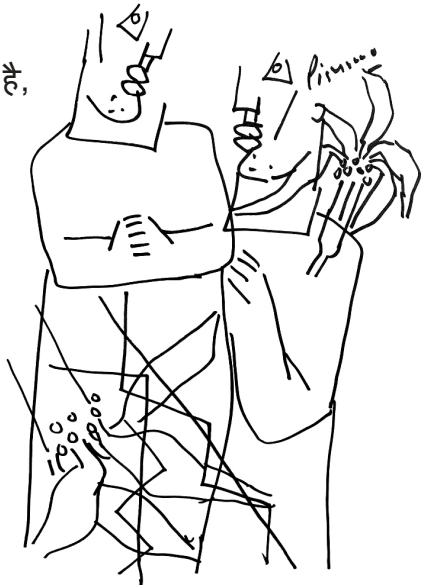

मेरे देहगाम के फार्म हाउस पर . . .

मैं चिड़ियों को,
रोटी के टुकड़े डालता हूँ.
मेरी हथेलियों से,
चिड़ियों की खुशी छलकती है.
मैं उन्हें टुकड़ों में बुलाता हूँ.

जल्दी आओ !
और पहले कौन होगा ?
रोटी के टुकड़े, सभी को मिलते हैं.
उनके छोटे पैर,
धरती पर संदेश देते हैं.
लेकिन बारिश गिरती है,
संदेश को मिटा देती है.

पक्षी धैर्यवान हैं,
वे एक बार फिर रेखाएँ खींचते हैं.
मुझे एक नया अक्षर सिखा रहे हैं.
एक पंछी अपने पंजों से,

गलती सुधारता है.
और मेरी कविताओं की
किताब भर जाती है.

जैसे गौरैया टुकड़ों को चुगती है.
घर के अंदर से,
समाचार-ध्वनियां बहती हैं.
मैंने सुना -
रक्षा मंत्री बता रहे हैं, कि
परमाणु हथियार का,
क्या प्रभाव होता है ?

गौरैया,
लगातार रोटी चुगती रहती है.
चिड़ियों को,
भूख का कोई भय नहीं है.
रोटी की महक,
युवती के सुगन्ध से कहीं अच्छी होती है.
चुप रहो, सब लोग, कृपया,
चिड़ियाँ रोटी चुग रही हैं.

दीप्तिमान-प्रिय

ओ दीप्तिमान-प्रिय,
तुम किसकी प्यारी दुल्हन बनोगी ?
तुम किसकी गरिमा की प्रशंसा करोगी,
किसका सम्मान और गौरव होगा ?
तुम इस शाम को,
अपने प्रेमी द्वारा फैलाए गए,
शामियाने में छायांकित हो,
तुम किसकी रानी ?

अपने सुगंधित बालों,
और प्यार के साथ.
तुम शहद से भी मीठी,
कोई शर्बत,
तुमसे ज्यादा मीठा नहीं है,
जो प्यार की लहर में,
अपने आप को ढूंढ़ता है,
क्या तुम हो ?

रात के अंधेरे में तुम दीप्तिमान हो,
भगवान तुम्हें बुरी नजर से बचाते हैं.
जीवन की सांस,
और किसका प्यार दुलार,
किसको गले लगाओगी तुम ?

अगर मुझे नहीं.
तो फिर
ओ, शराब-वाहक,
मुझे अपनी,
उत्तम शराब का प्याला पिलाओ.
यह प्यासे के लिए.
पानी देने वाला एक झरना है.

मेरा सब कुछ जल रहा है,
और मेरी प्यास,
भयानक दर्द पैदा कर रही है,
मेरे लिए कुछ और शराब लाओ.
मुझे तब तक पीने दो,
जब तक मेरा कोई अवशेष न रहे.

मेरा भारत

मेरा भारत ! . . .
कितना सुंदर देश है !
एक अद्भुत दृश्य वसंत,
और सर्दियों में फूल,
चमकीले और चमकीले होते हैं.
गर्मियों में लाल रंग के,
गुलमोहर और पलाश, चमकते हैं,
सर्दियों में वसंत-ज्वार की हवाएं,
लापरवाही से उड़ती हैं.

यहां हरे-भरे, और नरम सरसराहट वाले,
जंगल हैं, जो झरनों से घिरे हैं, अच्छी तरह से.
मधुर और हरेभरे खेत,
हरे रंग की मोटी चादर से, सजाए गए हैं.
देदीप्यमान उद्यान.
परी-भूमि अभी तक, कभी नहीं देखी गई है.
तीतरों ने प्रत्येक सरू में,
अपने बच्चों के लिए, एक घोंसला बनाया है.

फूलों की क्यारियाँ, नीरवता में सोती हैं.
हवा को सुगंधित करती हैं.
इस देश की भूमि,
सभी चिंताओं से मुक्त है.
यहाँ सभी मौसमों में,
मीठी महक वाली.
हरियाली उगती है.
और प्रचुर मात्रा में होती है.
यहाँ फलती-फूलती प्रकृति,
साल भर भरपूर रहती है.

इस देश में पक्षी झुंड में आते हैं.
घोंसला बनाने, और प्रजनन के लिए.
यहाँ सब कुछ,
यहाँ तक कि ऊँट का दूध भी,
ज़रूरत पड़ने पर मिल जाता है.
इस देश की मिट्टी,
वास्तव में -
सोने के अलावा और कुछ नहीं है.

सरदार

उसका निजी शासन नहीं है.
फिर भी, किसी ने भी,
उसके अधिकार-क्षेत्र में पैर नहीं रखा.
देश की समस्याएँ सुलझाने में,
महारत हासिल है.
औरों की तरह,
वह कभी गलत वचन नहीं देता है.
वह सख्त कार्यवाही करने में, सक्षम है.

सभी संवेदनशील मामलों का,
स्वयं प्रबंधन करता है.
अकेले बाहरी दुनिया में रहने वाला पुरुष,
अपनी रानी के पास रहने के लिए, नहीं बसा.
और अपने लिए मैदानों को ही चुना.

उसके क्रोध के डर से,
कोई भी इस देश पर,
बुरी नज़र डालने का, साहस नहीं करेगा.

वह देश से प्यार करते हैं.
वह देश की राग रह को पहचानते हैं.
जब भी उसने पुरुषार्थ का कोई आदेश दिया,
सभी अपने घरों को, श्रम के लिए छोड़ देंगे.
सभी उसके लिए, मरने के लिए तैयार होंगे.

हर त्यौहार पर,
अपने सैनिकों के साथ देश में दिखाई दिए.
उनके युद्ध शिविरों के तंबू अनगिनत हैं.
उसने अपनी सेना को,
अच्छी तरह से सुसज्जित किया है.

कोई भी व्यक्ति नहीं कर सकता,
ज्ञान और पराक्रम में, इस महारथी की बराबरी.
मर्दाना कवच में सहारा,
उसके दुश्मनों ने ललकारा है.
वह बहादुर, गाँधी प्रदेश से आता है.
वह उसका गौरव है !
वह गोल टोपी नहीं पहनता है,
बिना पगड़ी का एक सरदार है.

शनै - शनै

वह चाँद,
जिसे आसमान ने कभी,
सपनों में भी नहीं देखा था.
लौट आया है,
और आग लेकर आया है.
जिसे कोई पानी नहीं बुझा सकता.

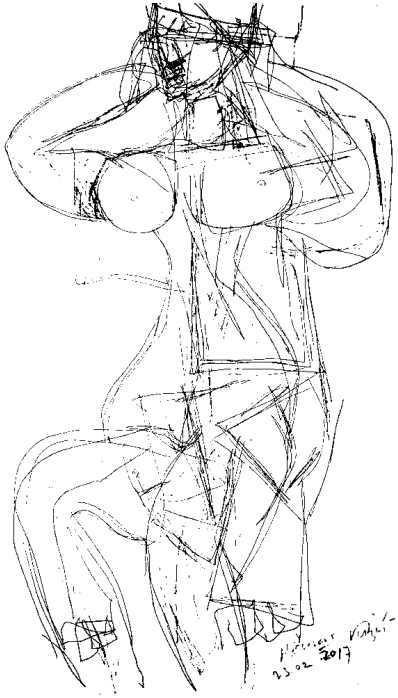

मेरे इस शरीर को देखो,
और मेरी आत्मा को देखो,
यह अपने प्यार के,
प्याले से मदहोश,
और उजाड़ हो गया है.
हर घर में, जहां प्यार से,
सूरज की किरणें पड़ती हैं.
मेरे दिल ने,
प्यार के समुद्र को देखा है,
अचानक उसने मुझे छोड़ दिया.

और मधुशाला,

मेरी दिल की दोस्त बन गई है.

मेरा खून शराब में,

और मेरा दिल,

कबाब में बदल गया.

जब दिल उसके बारे में सोचता है,

तो एक आवाज आती है.

अच्छा किया,

हे मदमस्त साकी,

मधुबाला का दामन थाम लिया.

कलेजा शांत होता है.

शनै - शनै.

और फिर शरीर भी,

शनै - शनै.

आँसू व्यर्थ हैं,

प्रेमी कोई पक्षी नहीं है,
जो इस तरह बेरहमी से,
पिंजरे में कैद कर दो.
तुम्हारी सुंदरता की,
रात और दिन, मैं
बहुत खुशी से प्रशंसा करता हूँ.

हे भगवान,
मेरे दिन को रात में मत बदलो.
तुमने वादा किया था,
कि मैं वसंत को पी सकता हूँ.
मेरे लिए शराब नहीं,
पानी से भरा एक प्याला लाओ.
जब तुम मेरे प्यार को,
पीछे हटाते हो,
तो मेरे लिए,
कोई शांति नहीं होती.

तिरस्कार मत करो,
मेरी प्यारी,
तुम्हारे वफादार रविन्द्र का.
मुझे अपना सिंहासन चाहिए,
मुझे मेरा मुकुट,
मेरी जागीर चाहिए,
मुझे मेरा लायक स्थान चाहिए,
मुझे अपने सीने में दिल चाहिए.

मुझे बताओ, प्यार,
अगर तुम और मैं प्यार करते हों,
और तुम बीमार हो जाते हो,
मैं तुम्हारे बगल में,
व्याकुल हो जाता हूँ.
प्यार तुम वह मलहम हो,
जो मेरे घावों को ठीक करता है.
मैं तुम्हारे बगल में रहता हूँ,
प्यार एक खुशी है,
एक अमूल्य रत्न है.

अगर तुम और मैं अलग हो गए तो,
मुझे खुद जीने की क्या ज़रूरत है.
मैंने प्रतिज्ञा की,
मैंने प्रार्थना की,
मैंने अपने निर्माता के सामने,
घुटने टेक दिए.
लेकिन, अगर मेरे सपने,
धुएँ में उड़ जाते हैं,
तो सचमुच मेरी प्रार्थनाएँ व्यर्थ हैं.

अगर, मेरा प्यार मर गया है,
रोने का क्या फायदा,
शोक का क्या फायदा.
अगर प्यार मर गया है,
और मैं जी सकता हूँ,
तो आँसू व्यर्थ हैं.

पर्दे

बुराई को छुपाने वाले परदे हैं.
गए मौसमों के झूठ को छुपाते हैं.
एक बाधा की तरह पर्दे हैं,
ताकि तुम नहीं जान सको, कि
क्या चल रहा है.
परदे हैं, जो आकाश को छिपाते हैं,
कि तारे चमकने से मना करें.
परदे छुपाते हैं राज़,
जो महीनों और सालों तक,
छुपे रहते हैं.
सभी रंगों के पर्दे हैं.
रेशम के बने, और खादी से बने.
बादलों से बने, और आग से बने.
मुस्कुराते हुए चेहरे भी पर्दे हैं.
चलो इन पर्दों के बिना रहते हैं.
मुझे छोड़ कर.
क्योंकी, मेरे पास,
शिष्टता का परदा है.

प्रिय, मैं थक गया हूँ,

प्रिय, मैं थक गया हूँ,
बहुत थक गया हूँ, प्रिय.
मुझे अपने पास,
कोई डॉक्टर नहीं चाहिए.
प्रिय, जब तुम पास हो.
अपनी कुर्सी करीब खींचो,
मुझसे बात करो.
मैं तुम्हारी,
आवाज सुनना चाहता हूँ.
और एक बार फिर,
अपना चेहरा दिखाओ.
अपनी पतली कमर को,
मेरी तरफ मोड़ो.
मेरे प्रिय, मेरे सिर पर,
अपना हाथ रखो, और
मेरा तापमान कम हो जायेगा.
मेरा स्वास्थ्य बहाल करो.

प्रिय, मैं थक गया हूँ,
बहुत थका हुआ हूँ प्रिय.
मुझे अपने पास,
कोई डॉक्टर नहीं चाहिए.
प्रिय, जब तुम पास हो.
तुम्हारे प्यार की गर्माहट,
तुम्हारा मानवीय प्रेम,
मेरे लिए काफी है.

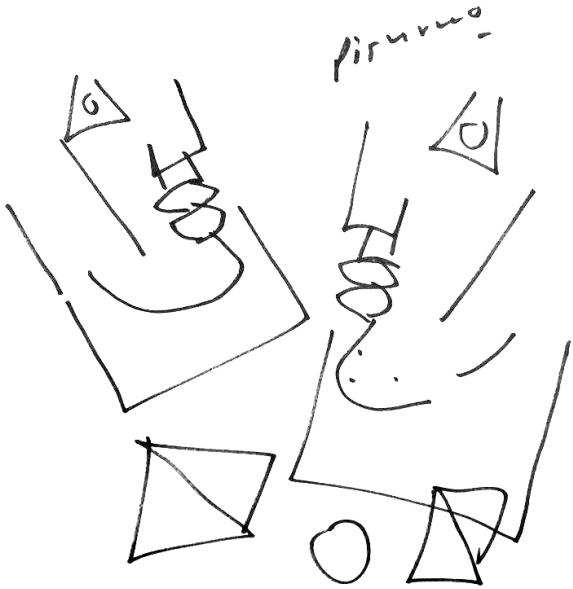

समकक्ष

(लैला और मजनूं से)

तुम, जिनके हाथ,
प्रेम की शानदार मूर्तियों को आकार देते हैं.
तुम, जिनके हाथ,
प्रेम की महान नींव का निर्माण करते हैं.
तुम जिनके हाथों में,
प्रेम की मीठी-सुगंधित किस्में हैं.
तुम जिनके हाथों ने,
मजनूं को प्रेम की बेड़ियों से बांधा है.
यदि एक मार्ग है,
सच के लिए, तो मैं हूँ.
अगर यह कहानी सामने आई तो,
सच पाई जाएगी.

यदि लैला के भाग्य की प्रशंसा करते हुए,
मजनूं के शब्दों में, मैं तुमसे कहूँगा,
मुझे आशा दो, मुझे विश्वास दो,
मुझे खुशी दो.

प्रार्थना करो, मेरे भविष्य को,
तुम्हारे साथ, प्रशस्त किया जाए.
प्रार्थना करें,
मेरा नाम के साथ लैला हो.
सहानुभूति जगाओ,
प्रार्थना करो,
मजनूं की दुःखद कहानी,
स्मृति को सताती है.
प्रार्थना करो मेरा प्यार,
उससे भी बड़ा प्यार हो.
जिसके पास लैला है.

केवल मेरी आँखें, नींद के बिना,
तुम्हारा प्यार भरा चेहरा देख सकती हैं.
क्या खुशी होगी,
उसकी और मेरी,
कितनी गर्म होगी,
मेरी जोश की लौ.
मजनूं के पास, उसकी लैला थी.
फरहाद के पास, उसकी शिरीन थी.

जबकि तुम, हे मेरे प्यार,
मेरे पास हो.
जिसके जीवन का तुम,
स्वतंत्र रूप से दावा कर सकते हो.

मेरी तुलना न करें,
जंगल के किसी शेर से,
या किसी टर्राते मेंढक से,
क्योंकि वह एक हजार विलाप करता है.
जबकि मौन, मैं दर्द सहता हूँ.
केवल वह, जिसने बहुत कुछ सहा है,
वह मेरे जैसी भयंकर पीड़ा से,
राहत पाता है.

कुछ लोग

अरे भाइयो और बहनों,
हम क्या कर रहे हैं ?
बेटे अपने पिता से नफरत करते हैं,
बेटियां अपनी मां से,
और बहुएं, अपनी सास से नफरत करती हैं.

कुछ लोग आवारा की तरह घूमते हैं.
कुछ चमड़े के कपड़े पहनते हैं.
प्रभाव में एक पाप.
कुछ लोग चातुर्य,
और अच्छे शिष्टाचार,
के बारे में कुछ नहीं जानते हैं.

जबकि, अन्य अपनों से बड़ों का,
आदर नहीं करते,
सम्मान नहीं करते हैं.
कुछ लोग पूरे दिन घूमते हैं,
कुछ भी नहीं करते हैं.

कुछ लोग भगवान का स्मरण नहीं करते.
कुछ लोग प्रार्थना करने में,
विश्वास नहीं करते हैं.
कुछ लोग, कानून का पालन,
करने से इनकार करते हैं.
कुछ ऐसे लोग हैं,
गुलाब का जिन्हें मोह नहीं है.

ऐसे लोग भी हैं,
जो अपने कपड़ों के लिए,
कपड़ा नहीं खरीद सकते हैं.
कुछ ऐसे लोग हैं, जो रेशम पहनते हैं,
लेकिन नंगापन नहीं छुपाते हैं.
कुछ ऐसे भी हैं
जिनके पास काम करने की शक्ति है.
पर सिर्फ आराम करते हैं.
कुछ ऐसे भी हैं,
जो कुत्ते पालते हैं,
और, उनके बच्चों को,
दाईयें पालती है.

चमत्कारी कुछ ऐसे हैं,
जो अपने लक्ष्य को,
कभी हासिल नहीं कर सकते हैं.
कुछ ऐसे हैं, जो
अपने बच्चों के लिए,
रोटी नहीं खरीद सकते हैं.
और कुछ हैं, जो मक्खन खाते हैं.
लेकिन शहद तिरस्कार करते हैं.

फिर भी, ऐसे ये लोग हैं,
जिन्हें तुम फूल भेंट करोगे.
ऐसे लोग हैं,
उनकी तारीफ के पुल बंधोगे,
उनके लिए कवितायें लिखोगे
जो अपनी भौंहों के रंग,
रोज़ बदलते हैं.

मेरे पिता का संस्मरण

वे सख्त थे.
जब मैं स्कूल के लिए,
जल्दी जाता था,
तो कभी नहीं चाहता था,
कि वे मुझे देखते हुए देखें.
उन्होंने कभी,
अपनी भावनाओं के बारे में,
बात नहीं की.
और यह भी कभी नहीं दिखाया, कि
वह अपने बच्चों की,
कितनी परवाह करते हैं.

कभी-कभी,
वे चुपके से मुझे देखते,
और मुस्कुराते.
कभी-कभी, वे कुछ भी,
प्रतिभाव नहीं देते थे.
कोई गलत आदत नहीं थी.

उनके लिए, अपने बच्चों के लिए.
खुद को बलिदान करने के लिए.
बोलते कम थे.

बड़ों की सेवा,
भाई-बहनों से लगाव,
बच्चों को दुलार,
यही हमें संस्कार सिखाने का,
उनका अपना तरीका था.
ज्ञान देने से,
हजार गुना ज्यादा प्रभावी था.

उनका प्यार भी ठण्डा था.
बर्फ की एक मोटी परत की तरह.
जो कड़ाके की सर्दी से,
कोमल पौधों की रक्षा करता है.
मुझे हर गलती पर डाँटते थे.
या मेरी शैतानियों से तंग आकर,
कभी मारते भी थे.
बाहर से बहुत सख्त,

अंदर से नर्म थे, मेरे लिए.
शायद उनके दिल में दफन,
कई गम थे.
बेटीयों की शादी, बेटों को व्यापार,
बहुओं की खुशियां, दामादों का मान.
कुछ ऐसे ही सफर में,
गुजर गए ज़माने.
हमारे सफल जीवन के लिए,
बहुत सपने थे उनके,
हम उन्हें, अपनी सफलतायें दिखा नहीं पाए.
लेकिन, स्वर्ग से,
वो सब देख ही रहे होंगे.

जब भी,
किसी मुसीबत मैं होने पर,
मुश्किल सवाल का, जवाब ना मिलने पर,
याद आते हैं मुझे,
अपने आदरणीय पिता.
एक बार, मेरे पास ऐसे पिता थे.

एक आदमी ने कहा

एक आदमी ने कहा,
तुम थके हुए, और कमजोर हो !
तुम्हें समुद्र तट पर टहलना चाहिए.
चाँद और तारों से जगमगाते,
आकाश को देखने के लिए.
जहाँ शोर करने वाली भीड़,
नहीं पहुँच सकती, समुद्र और स्वर्ग
आँख को सुकून देते हैं.

एक आदमी ने कहा,
तुम थके हुए और कमजोर हो !
एक बार फिर बसंत आ गया है,
पहाड़ी इलाके घूमने जाना चाहिए.
और पहाड़ियों पर चढ़ें.
शहर के जीवन से,
मुझे बहोत डर लगता है.
यह बहुत सी बीमारियाँ फैलाता है.

एक आदमी ने कहा,
तुम थके हुए और कमजोर हो !
तुम बहुत मेहनत से पढ़ते हो.
और जानना चाहते हो कि,
सौ साल पहले,
क्या बीत गया था.
और आगे क्या होगा.
तुम अपने दिमाग को, तकलीफ देते हो.

एक आदमी ने कहा,
तुम थके हुए और कमजोर हो !
"बस एक मिनट ठहरो,"
मैंने कहा,
"क्या तुम्हें नहीं लगता कि
की यह सब झूठ है ...
अगर मैंने रात में,
सपना नहीं देखा,
या मैंने पूरे दिन नहीं सोचा,
या अपने शब्द,
कविता मैं नहीं पिरोये.

अगर मैं खड़ा नहीं होता और
नहीं लड़ता.
तो हम, आपकी बात को सही मानते.

अगर मुझे गर्मी महसूस नहीं हुई,
मेरे शब्दों, और गहरे विश्वास की,
और कड़वे-मीठे को नज़रअंदाज़ कर दिया.
अगर मैं अपने कदमों को,
पीछे मोड़ दूँ,
हमारे देश के महान ध्वज के साथ मार्च पर.
तब मेरी कविताओं को,
कोई नहीं पढ़ेगा.
मेरी जन्मभूमि ध्यान नहीं देगी.
अगर मुझे मरना ही है,
तो रहने दो.
जब मानवजाति की लड़ाई,
मेरे चारों ओर भड़क उठती है,
तब मुझे मनुष्य की आँखों में देखने दो,
मेरे हाथ को,
पीड़ित का हाथ पकड़ने दो.

मैं बड़ा हो गया हूँ

मेरे पिता से बड़े,
मेरे दादाजी की मृत्यु हो गई,
जब वह 80 वर्ष के थे.

मेरे पिताजी,
जब वह 70 वर्ष के थे.
लेकिन मैं बड़ा हूँ,
मेरे साठवें वर्ष में.
मेरे पिता और मेरे दादा,
दोनों की तुलना में.

मेरा प्यार,
और मेरा स्वभाव बदल गया है...
जितनी तेज गति से.
दूरी उतनी ही कम हो गयी है.

कल आज से,
कुछ मिनट उधार लेता है.

और आज - कल से.
दिन सब मिले-जुले हैं.
और ऐसे ही महीने हैं.
हमने महीनों को खो दिया है.
वर्षों को किफायती कर दिया है.

एक ही महीने में,
मैं उतना जी लेता हूँ.
जैसा कि मेरे दादाजी ने,
एक ही साल में जिया था.

मैं पहाड़ से नीचे बहने वाली नदी हूँ,
पहाड़ की चोटी को चीरती हुई,
पहाड़ों में, स्वच्छ पानी भरी एक धारा,
और घाटी में एक साफ नदी.
सैकड़ों, अलग-अलग मिजाज वाली नदी.
मैं अपने पिता से बड़ा हूँ.
मैं अपने दादा से बड़ा हूँ.

यह दुनिया

हमारी यह दुनिया,
एक अच्छे लड़के की तरह है.
एक अच्छी जवान लड़की,
इसे खराब मत करो.
मुझे यह पसंद है.
एक विशाल तरबूज,
कभी इतना गोल, कभी इतना अच्छा,
कभी इतना प्यारा.

बलात्कारी के हाथ वाला हर कोई,
उसकी बाजू में, एक चाकू चिपका देता है.
और देखो उन्होंने क्या किया है.
वे कहते हैं,
"तुम एक ही दिन में पूरा खा लो,"
वे कहते हैं,
उनमें से कई ऐसे भी थे,
जो लालच से मर गए.
जो इसे जबरदस्ती बांटते हैं.

लेकिन किसी ने इसे नहीं खाया है.

और न ही कभी खाएंगे.

पृथ्वी घूमती है,

प्रसन्नतापूर्वक घूमती है.

सभी चाकू उसके किनारों से.

निकाल लिए जाएंगे.

सपनों का गुलदस्ता

हर रंग से मत कहो,
मत कहो,
सभी गुलाब एक जैसे होते हैं,
प्राप्त सुगंध के लिए.
हर रंग एक जैसा नहीं.

ठंडी हवा का हर झोंका,
जो उड़ता है
सभी दिशाओं से,
अपनी इच्छाओं की,
एक अलग भाषा बोलता है.
घने छायादार जंगलों में बसंत,
प्रेमियों के आने के,
इंतज़ार में रहता है.

आँखों का,
जिससे, प्यार से कुछ,
अतिरिक्त मूढ़ता जुड़ जाती है.

रातें आएंगी,

और दिन बीतेंगे.

पक्षियों की कतार के बाद,

कतार उड़ती रहेंगी.

हमारे साथ,

मौसम के स्मृति चिन्ह,

के रूप में रहेंगे.

हमारे साझा सपने.

आइए,

आइए इकट्ठा करें एक गुलदस्ता,

हर रंग के सपनों का,

हर रंग,

और हर कविता की,

अपनी एक खास सुगंध होती है.

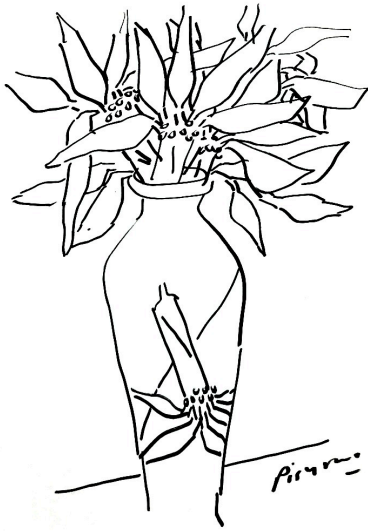

समय के अंत तक . . .

मैंने तुम्हें काफी देर से खोजा,
और उसके बाद,
मैंने तुम्हें बहुत जल्दी खो दिया.

संयोग से एक दिन,
तुम अपनी कविताओं के साथ,
मेरे सामने आए.
अपने शब्दों के साथ,
तुम बस गए,
मेरी आँखों से मेरे दिल में.

तुम्हारी,
शब्दावली के जादू के लिए,
मैंने अपना पूरा दिल दे दिया.
मैंने कहा,
यह सावन बरसता रहेगा,
समय के अंत तक . . .

कहाँ छुपे हुए थे इतने समय तक,
क्या नहीं लगता, की
अब बहुत देर हो चुकी है.
पर ये समझ लो कि,
किस्मत ने,
ये सब कुछ समझ लिया है.

मैंने जिस बाग में कदम रखे थे,
वो अचानक वीरान हो गया.
कुछ कलियाँ, और
खिले हुए गुलाब,
जिन्हें मैंने तोड़ा था,
मेरे हाथों में रहते हुए ही,
मुरझा गए.
काश ! काश !
तुम, कुछ पहले ही मिल गए होते.

मैं तुमसे मिला था

मैं तुमसे मिला था,
और हम दोनों को,
एक दूसरे से प्यार हो गया था.
जैसे ही तुमने,
अपनी आँखें बंद कीं,
मैंने अपनी आँखें खोलीं.
धुंआ, हर तरफ व्याप्त था,
कोहरा और मातम,
आग की राख अभी भी गर्म थी.

मेरे शहर से
सभी प्यारे पक्षी शर्म से उड़ गए थे.
मौन, हर जगह खाली थी.
सब कुछ बेकार, सब कुछ खोखला.
दुनिया के गंभीर माहौल में,
हम दोनों अनाथ होकर,
अनंत दर्द महसूस कर रहे थे.

मैं बड़ा हुआ,
और ऊंचाई में बढ़ता गया.
मेरे दिन, रातों द्वारा शासित थे.
सभी मौसम,
प्रारंभ और समाप्त,
उसी शरद ऋतु की उदासी के साथ.

वह तुम ही थे,
जिसने मेरे ख्वाबों को,
अपने ख्यालों से भर दिया था.
तुम ही थे,
जो मेरी आँखों की,
दिव्य ज्योति बन गए थे.
मेरे घुटनों की ताकत,
और मेरे दिल की असीम शांति.

कर्म

मैं अपने कमरे में बैठा,
सोच रहा हूँ.
जैसे ही मैं अपनी कविता को पढता हूँ.
मेरी कविता सुनने के लिए,
मेरी कविता मुझ से बात करती है.
शांति से, कोमलता से,
और मैं सूचीबद्ध करता हूँ.
बुज़ुर्गों के उपभेदों को.
और मैं सुनता हूँ,
जैसे कोई गाता है,
गुज़रे हुए ज़माने.

कविता के शब्द,
मुझसे कहते हैं,
एक भाषा, जो जानते हैं, कि
यदि मानव जीवन,
समाप्त हो जाता है.
इन्सान का प्यार,

यूँ ही चलता रहेगा.
इंसानी ख्वाब, और
इंसानी कर्म,
बेवजह नहीं रहेंगे.

किसी और समय,
किसी और दिन,
आपकी उपस्तिथि की,
आपके कर्मों की,
याद दिलाते रहेंगे.

इस प्रकार,
मेरी कवितायें,
मुझसे बात करती हैं.
मेरे कमरे के शांत में.
हालांकि कर्म करने वाला,
गुजर जाएगा,
"कर्म" फिर भी जिन्दा रहेगा.

आबादी घटाने के यही नियम है . . .

चमगादड़,
कोरोना वायरस,
लक्षण दिखाते हैं.
संक्रमण फैलाते हैं.
आबादी घटाने के, यही नियम हैं.

हम दो सालों से मुसीबत में हैं,
कोई स्वस्थ नहीं,
कोई ताकत नहीं,
कोई जीवन नहीं.

मुसीबतें कई गुना बढ़ गई हैं,
लेकिन कोई समाधान नहीं,
कोई दवा नहीं,
कोई उपाय नहीं,
कोई इलाज नहीं,
कोई समाधान नहीं,
कोई स्वास्थ्य नहीं,

कोई डॉक्टर नहीं.
कई को कर्म-भूमि छोड़ने के लिए,
मजबूर किया गया है.
आबादी घटाने के, यही नियम हैं.

वफादारी और प्यार,
सोने में बदल गया था.
न साधु, न न्याय,
न मानवता, न वैज्ञानिक,
न मस्ती, न ज्ञान,
न पंछी गाते हैं,
न फूल खिलते हैं.

सुंदर कोकिला को गाए हुए,
बहुत समय हो गया है.
दुखी दिल हमेशा तड़पता है.
कोई लड़ाई नहीं,
कोई लड़ाई का मैदान नहीं,
कोई संगठन नहीं,
कोई विद्रोही नहीं.

ज्यादातर लोग,
अब अपने अपने घरों में सड़ते हैं.

ज़ुल्म और तड़प में,
ज़िंदगी गुज़रती है.
शायद, हम कब्र में आराम पाएँ,
अगर हम मर गए तो.
कोई आज़ादी नहीं,
कोई आदेश नहीं बचा,
कोई आराम नहीं,
कोई न्यायाधीश नहीं.

कोरोना वायरस ने,
हमारे दिलों को कुचल दिया है,
उसका अत्याचार और जुल्म,
दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा है.
आशा की ज्योति बुझ गई है.
कोई गीता नहीं,
कोई कुरान नहीं.
कोई आस्तिक नहीं,

कोई हिन्दू नहीं,

कोई मुसलमान नहीं.

सारी दौलत बेकार हो गई.

हमारे दिल में लालसा और,

चिंता नहीं रहती है.

हमारे अधिकार,

वो इच्छायें,

जो कभी हुआ करती थी,

अब मौजूद नहीं है.

आबादी घटाने के, यही नियम हैं.

दुख

जिन आँखों को,
जबरन बंद कर दिया था.
वे दिन के उजाले को,
कैसे समझ सकते थे ?
मेरे पास अनुमति नहीं थी,
और न ही संभावना,
तुम्हें दिखाने के लिए.

जिन लोगों से तुम प्यार करते थे,
वे सब दुख में हैं.
हमारी आंखें नम हैं.
माल्यार्पण के साथ,
तुम्हारा अनुसरण,
अपनी कब्र की तरफ.

कोहरे और मातम के धुएं में,
अपने जीवन के साथ-साथ,
पूरी श्रद्धा के साथ,

पंक्तियों में खड़े हैं.

हमारे द्वारा प्राप्त,

दुखद समाचार के साथ,

हमारे लोग शोक में हैं.

हमारा दिल दुखों से भरा है.

और हमारी आंखें नम हैं.

मेरी माँ

वह, बहुत काम पढ़ी लिखी थी
अपना नाम,
बहुत धीरे धीरे लिख पाती थी.

लेकिन, उसने मुझे गिनना सिखाया.
उसने मुझे महीनों,
और वर्षों के नाम सिखाए.
भगवान को याद करने के,
स्तवन याद कराये,
और सबसे महत्वपूर्ण बात,
उसने मुझे भाषा सिखाई.

मेरी माँ से,
मैंने खुशी का स्वाद चखा.
और दुख,
इस भाषा के साथ,
और मैंने अपनी हर कविता रची.
और हर राग,

इस भाषा के साथ है.

इसके बिना,

मैं कोई नहीं हूँ.

मैं एक झूठ हूँ.

मेरे काम के निर्माता,

अपने सभी संस्करणों,

और मात्राओं में,

मेरी माँ है.

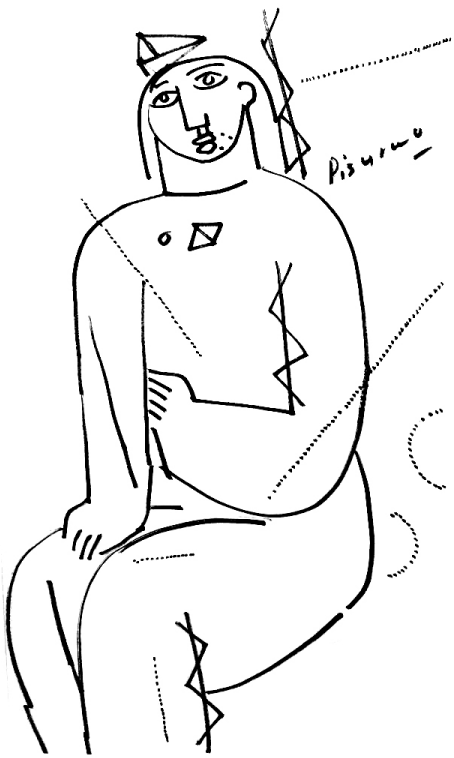

डर

मेरे दाहिने हाथ में एक पुराना घाव है,
बचपन से एक विरासत.
इस बात से अनजान है, कि
पटाखे जलते फूटते हैं.
मुझ पर एक चेतावनी.

लेकिन मैं नहीं डरता था,
मुझे डर तभी लगा जब,
मैंने अपना हाथ जलाया.
जीवन का वास्तविक अनुभव,
उस आग से शुरू हुआ.
अंगारों की रंग-बिरंगी लपटों ने,
मेरी बचकानी आँखों को सहलाया.
मुझे नहीं पता क्यों हुआ ये सब कुछ.

जब से बचपन ने मुझे जला दिया है.
मुझे तब तक डर नहीं लगा,
जब तक कि मैं जल नहीं गया.

जब तक मैंने,
अपने बचपन के रास्ते नहीं छोड़े,
तब तक मुझे,
डर का पता नहीं चला.

जलने के बाद से,
मैं आग से खेलते समय, सावधान रहता हूँ.
और इसीसे जीवन शुरू होता है,
और एक आदत के रूप में,
जारी रहता है.

मुझे खुद होना चाहिए,
खुद को समझो और पूरा समझो.
पहले किसीके आगे झुकना बंद करो.
फिर बचो दूसरों की,
इतनी चापलूसी करने से,
तुम खुद अपने सबसे बड़े दुश्मन हो.
हमने खुद को पूरी तरह खो दिया है,
कहाँ है जोश,
कहाँ है अभिमान ?

प्रकाश

मेरी यह नई कविता भी,
प्रकाश मांगती है.
हर पंक्ति,
एक झूमर की तरह चमकती है.
कोई आश्चर्य की जगह नहीं है.
जहाँ मैं जीवन में आया हूँ,
क्या भारत,
प्रकाश का जन्मस्थान है.
जहाँ मैं बड़ा हुआ.
पहले तो मेरी इच्छा थी, कि
मुझे अभियाँत्रिक (इंजीनियर) बनना चाहिए.
लेकिन मैंने मेरा फैसला बदल दिया.
एक अभियाँत्रिक,
केवल खाका खींचता है.
मैंने सोचा,
और एक बिजली मिस्त्री के रूप में,
काम करने चला गया.
एक तारा अब हर,

छत के नीचे जलता है.

और रात में,

सूरज की तरह चमकता है.

मेरे जीवन का,

सबसे अहम समय,

मेरी जवानी,

मैंने जला दी,

इसे प्रकाश में परिवर्तित कर दिया.

अगर युद्ध नहीं होता

अगर युद्ध नहीं होता,
तो युद्ध नहीं होता.
हम खुले चूल्हे की भट्टी में,
हथियारों को पिघलकर,
पृथ्वी और मंगल के बीच,
एक पुल का निर्माण कर सकते हैं.

अगर युद्ध न होता,
एक हजार साल की फसल,
एक साल में पैदा हो सकती है.
वैज्ञानिक चांद और तारों को,
धरती पर ला सकते हैं.
सेना के जनरल की,
आंखें भी कहती हैं.
"मैं एक छोटे से गाँव में,
अध्यक्ष होता.
अगर युद्ध नहीं होता !"

हम असमय होने वाली,

मौतों से बच सकते.

हमारे बाल बहुत देर से सफेद होते.

युद्ध न होता तो हम,

न दुख, न विदाई,

का सामना करते.

अगर युद्ध न होता,

मानव जाति की गोली, उसका शब्द होता,

और मानव जाति का शब्द प्रेम होता.

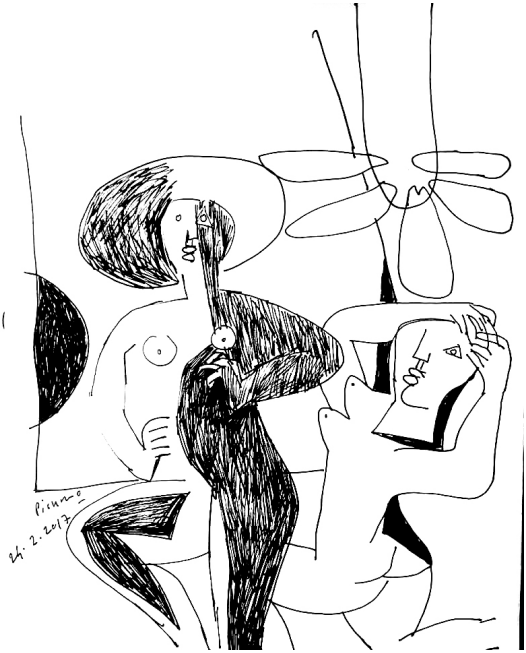

इतने अविभाज्य हैं हम

मैं तुम्हें कैसे भूल सकता हूँ ...
देखो, घर कितना सूना लगता है.
मेरा सब कुछ,
तुम्हारे साथ चला गया है.
मेरा दिल और आत्मा ही नहीं,
आराम और नींद की भावना ने भी,
मुझे छोड़ दिया है.

एक पल के लिए आराम करने का,
एक ही तरीका है.
तुमको अपने दिमाग से निकाल दूं.
लेकिन क्यों ?
घास और पानी की तरह,
हर जगह तुम ही क्यों दिखते हो ?

जब मैं एक यात्री के रूप में,
उद्यम करता हूँ,
तो तुम अंतहीन,

घास के मैदान में बदल जाते हो.

जब मैं रात में,

तुम्हें भूलने की कोशिश करता हूँ,

तुम रात में ही बदल जाते हो.

दिन में -

तुम स्वयं प्रकाश बन जाते हो.

जब मैं पहाड़ों पर चढ़ता हूँ,

तो बादलों की गड़गड़ाहट,

मुझे तुम्हारी याद दिलाती है.

जैसे हवा, मेरे बालों को उड़ा रही है.

शायद हम दो अलग साज़ हैं,

एक ही तार से जुड़े हुए.

तुम खून, मैं दिल -

इतने अविभाज्य.

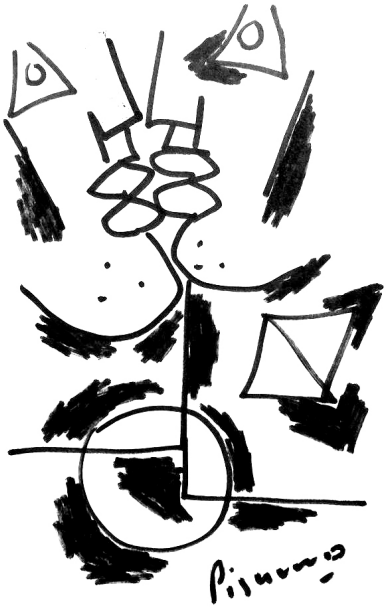

असामयिक फूल

जो गलत मौसम में खिला है.
मैं खुद को संयमित नहीं करूंगा,
अगर कोई नियम नहीं है,
कोई परंपरा नहीं है.
मैं पीछे नहीं हटूंगा,
तुम्हें मुझसे नाराज़ होने का हक़ है.
क्या करूँ?
जीवन का कोई,
दूसरा वसंत नहीं है.
प्यार का ठिकाना,
हर किसी के
नसीब में नहीं होता.
तुम एक फूल की तरह हो,
बर्फ के नीचे
बेमौसम खिल गए हो.
अगर मैं तुम्हें नहीं चुनता,
तो तूफान तुम्हें जीने नहीं देता.
यदि मैं ऐसा करता हूँ,

तो तुम मेरे हाथों में रहोगे, प्रिये !

मेरे दिल में रहोगे.

यह दुनिया तुम्हारी है.

हम भाग्य के खेल में,

एक साथ जुड़े हुए,

पासों की एक जोड़ी हैं.

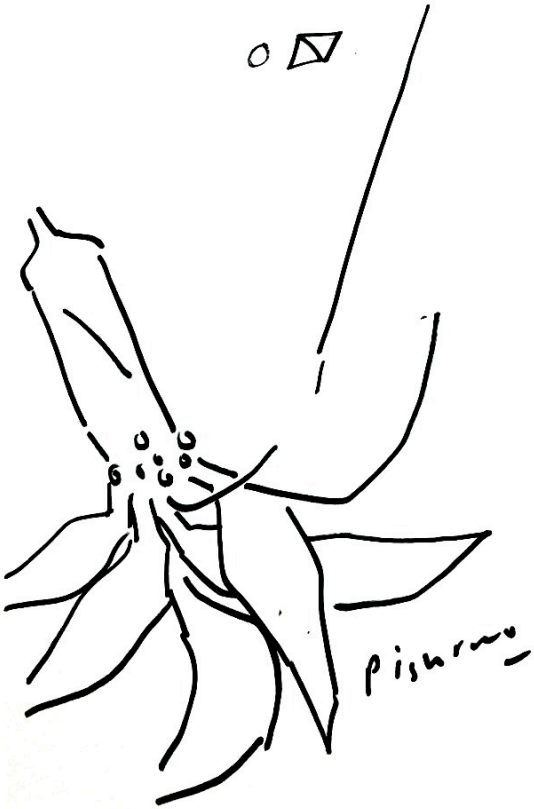

एक साधारण आदमी

मैं पीने के पानी का,
एक घूंट नहीं हूँ.
मैं कोई रास्ता नहीं हूँ,
जिस पर बिना रुके चलो.
ये सच है,
मैं तो बस एक आम आदमी हूँ.
मैं उतना महान नहीं हूँ,
जितना कि तुम छोटे हो जाओ.
एक साधारण आदमी होना ही,
महानता है, मेरे भाई !
इस नाम को जीवन भर ढोना,
एक भारी बोझ है.

मेरा अपना परिवार है, मेरे अपने बच्चे हैं,
मेरी अपनी रोटी, मेरी अपनी जान,
मेरी अपनी पीढ़ी,
मेरा अपना घर, मेरा अपना नाम.
मेरा एक अच्छा पड़ोसी है,

और एक बुरा भी है.
मेरे दोस्त और दुश्मन दोनों हैं !
(चाहे वह सही हो या गलत).

मैं मेरा अपना हूँ.
मैं एक साधारण आदमी हूँ.
न महान, न छोटा.
एक साधारण आदमी होना,
अपने आप में एक भारी बोझ है.
मेरे दोस्तों के लिए,
मेरे पास दोनों हैं, खुले दरवाजे, और
एक खुला दिल.
मेरी मेज पर हमेशा,
रोटी और नमक होता है.

मैं राजनयिक नहीं हूँ.
मैं सिर्फ एक साधारण आदमी हूँ.
मुझे श्रेय दिया जाना चाहिए, अगर
मैं इस नाम को,
अंत तक कायम रख सकूँ.

मदद

मुझे बताओ, क्या अलाव होता,
अगर लौ नहीं होती ?
अगर धौंकनी नहीं होती ?
क्या भट्ठी को जलाया जाता ?

कहते हैं कीमती पत्थर,
जमीन पर गिरने के बाद भी,
अपनी कीमत नहीं खोता.
लेकिन, अगर कोई इसे नहीं उठाता,
इसे पैर के नीचे रौंदा जाएगा.

क्या उसकी म्यान के बिना,
तलवार में जंग नहीं लग जाएगी ?
क्या बिना बादलों के
कभी बरसात हुई है ?
या तूफान आया है ?
शायद भगवान अदृश्य हो गए हैं,
क्योंकि किसी ने उन्हें ऐसा बनाया है.

पानी को देखो, पेड़, लोग,
क्या सूर्य के बिना जीवन होता ?

क्या चलने वाली छड़ी,
उस बूढ़े आदमी के लिए मददगार नहीं है ?
जो उम्र के कारण चल नहीं सकता.
कोई भी जिम्मेदारी से भागे नहीं,
हम सभी को एक दूसरे की जरूरत है.

बेहतर है,
कि किसी ऐसे व्यक्ति को,
आदमी न कहें.
जो दूसरों की ज़रूरत में,
मदद नहीं करता.

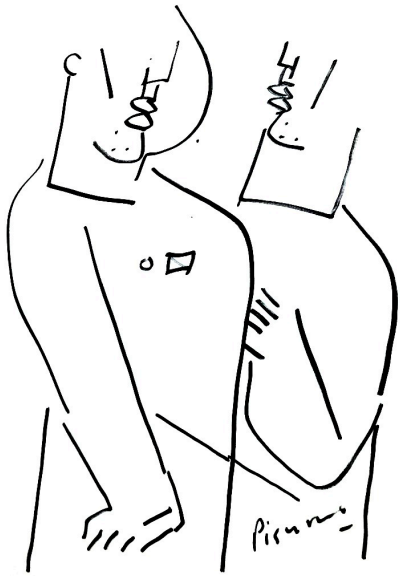

सांप का बच्चा

एक दिन मेरे टेबल पर चढ़ आया था.
सफ़ेद की-बोर्ड पर काला.
नन्हे सांप का बच्चा बड़ा हो रहा है.
इधर-उधर रेंग रहा है.
पानी, रेत और पत्थर पर.
जिस हवा में वह सांस लेता है,
उसका आनंद ले रहा है.
हमारी रातों की नींद को,
दूर कर रहा है.
फूलों की सुगन्ध,
घास की सुगन्ध,
वायु की श्वास,
उसके शरीर को भर देती है.
चुपचाप, शांति से अनजाने में.

उसके शरीर में,
सब कुछ विष बन जाता है.
एक दिन यह सांप का बच्चा

भीतर छिपे जहर से वाकिफ होगा,
शायद उसकी किस्मत खराब होगी,
या दुख से घुट जाएगा.

रोओ मत, सपोले,
अपनी किस्मत को धिक्कार मत,
तुम्हें इसे सहन करना होगा,
यही तुम्हारा जीवन है.
यह तुम्हारी नियति थी.
एक प्यार भरा दिल,
तुम्हारे सीने में है.
तुम्हारे नुकीले दांतों के नीचे,
एक जहर की थैली लगा दी गयी है.

जो कोई तुम्हें देखता है,
वह चिल्लाता है,
साँप, साँप !
वे तुम्हें भगाते रहते हैं,
वे तुम्हारा रास्ता रोकते हैं,
हर तरफ इस दुनिया में.

तुम्हारे पास एक ही रास्ता है,
तुम्हारे सिर से तुम्हारी पूंछ तक,
तुम्हारे जहरीले दांत से तुम्हारी पूंछ तक,
केवल एक ही रास्ता बचा है.
तुम अपने तरीके से रहो,
रोओ मत, सपोले,
इस दुनिया में,
तुम ही अपने लिए प्रिय हो.
तुम कहाँ भागोगे,
दुनिया की दृष्टि से,
ओझल होने के लिए ?
तुम क्या करोगे,
इस क्रूर दुनिया के साथ ?

तुम अपनी त्वचा को कई बार बदलोगे,
खुद से अलग नहीं हो पाओगे.
खुद की आदत डाल लो,
धीरे - धीरे.
जीवन के सभी पहलुओं की आदत डाल लो.
अपने भीतर के विष,

और दुख से अपने को मिला लो.
ऐसे ही जीना सीख लो.

अपने आप से चिढ़ो मत,
साँप का बच्चे,
तुम सबसे कड़वे सच हो.
तुम सत्य की राह हो,
हो सकता है, कि
भगवान ने तुम्हारे लिए,
यही जीवन चुना हो.
या हो सकता है जीवन,
जिसके सैकड़ों चेहरे हैं,
तुम्हारे द्वारा स्वयं को शुद्ध करता है.

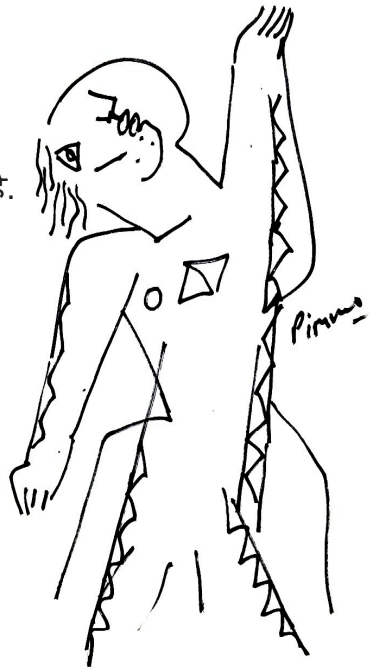

एक अर्थहीन जीवन

किसी अनजान शहर के,
भीड़-भाड़ वाले स्टेशन पर,
या यात्री गाड़ी में,
जो थके हुए लोगों के साथ,
चल रही है.
और जो अब खाली है.
और अब भरी हुई है.
तुम एक महिला से मिल सकते हो.
वह एक स्वप्न परी की तरह,
दिखाई दे सकती है.
वह अप्रत्याशित रूप से,
प्रकट हो सकती है.
स्टेशन पर,
या यात्री बस में.
और उस दिन, तुम
या तो हैरान हो जाओगे,
या तुम पर बेहोशी छा जाएगी.
एक ईश्वर है,

ये तुम हमेशा के लिए याद रखोगे.

और जब तक,

तुम उस महिला से नहीं मिले,

तब तक संसार उतना बड़ा नहीं था.

और तुम समझ सकते हो, कि

भगवान ने तुम्हें,

एक अर्थहीन जीवन,

जीने नहीं दिया था.

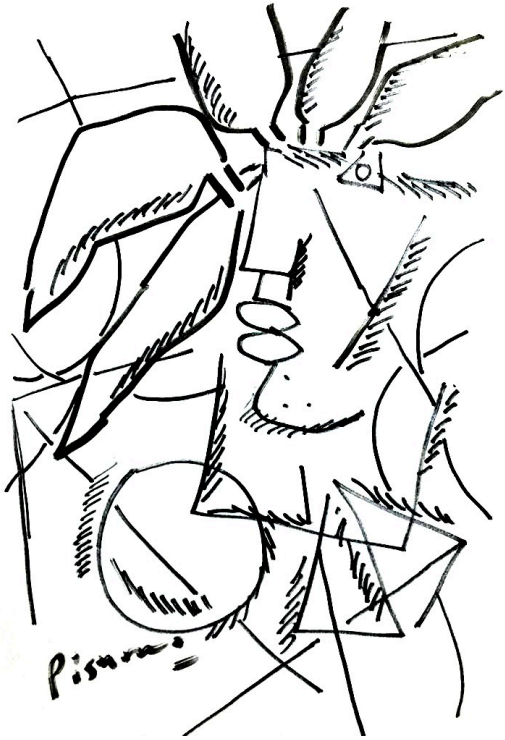

मैं अकेला रहना चाहता हूँ,

मैं अकेला रहना चाहता हूँ.
हर चीज से थक गया हूँ.
शोर और शहर की गंदगी से,
आस पास लोगों से,
मेरे दैनिक कर्तव्यों के लिए,
मुझे अकेलेपन की आवश्यकता है.
हर चीज से थके हुए,
अजीब धैर्य से,
सहनशीलता से,
दुनिया के चक्कर लगाने के लिए.

मुझे, मुझसे बहुत दूर रहना है,
इतनी सारी पार्टियां,
इतनी सारी बैठकें,
मुझे बकवास,
और बेकार के भाषणों से नफरत है.
इसके बजाय,
मैं अपनी दुनिया में,

चला जाना चाहता हूँ.

फिर भी,

पास में,

एक चापलूस,

अपनी बात कहता है.

प्रशंसा और प्रशंसा,

और प्रशंसा से भरा हुआ.

ईमानदार शब्द कम और कम हैं.

इतने चेहरों पर,

फिर अभिमान नहीं है.

सिर्फ नफरत,

मेरी हड्डियों में व्याप्त है.

और यह एक जीवन है . . . .

मेरे मन में भूले हुए भाव जग रहे थे.
एक ही बार में जागी मीठी स्मृति,
इस सुगंध ने मेरे दिल को छू लिया.
और यह एक जीवन है . . . .

सूर्योदय, अँधेरे के परदे को भेद कर,
अपनी जलती हुई किरणों को,
धरती पर फैलाकर देखा, मेरे दिल की ख्वाहिश.
और यह एक जीवन है . . . .

एक व्यक्ति, जिसने
अपने सम्मान को समाप्त कर दिया.
उसने मेरी आत्मा पर अत्याचार किया,
और मुझे उसके सभी कर्मों से,
अनभिज्ञ कर दिया.
मेरा विचार वास्तव में पीड़ित था.
इसने मेरा नाजुक दिल तोड़ दिया,
और यह भी एक जीवन . . . .

प्यार और दुख की भावना ने,
मुझे जीना सिखाया.
रात ठीक वैसी ही है,
जैसे भोर सफेद काली लग रही थी.
जैसे जुड़वाँ बच्चे पैदा हुए,
आशा और निराशा का रोना.
मेरे कराहते दिल को चमका दिया.
और यह भी एक जीवन है . . . .

एक आधी रात का प्यार का सपना.
मुझे वह पल दिया, जो कभी नहीं छोड़ा.
इससे पहले फूलों की पंखुड़ियों ने,
मेरी आत्मा को छुआ और,
मेरी खुशी को बढ़ाया.
प्यार की जलती हुई कृपा से,
अलग होने के डर से,
मेरे सपनों ने मुझे जीवित रखा.
और यह भी एक जीवन है . . . .

दो अंधे आदमी

एक अंधा आदमी है,
जिसे मैं जानता हूँ.
उसकी आंखें दृष्टिहीन हैं,
लेकिन वह अंधा नहीं है.
हालाँकि वह कभी-कभी,
दुखों की आग में झुलस जाता है.
वह अपने जुनून,
और अपने दिमाग को,
ठंडा नहीं होने देता है.
वह दिन-रात पढ़ता-लिखता है.
मन की आँखों से वह देखता है.
महसूस करता है, जानता है.

लेकिन कोई और है.
हालाँकि वह अंधा नहीं है.
फिर भी, वह देख नहीं सकता,
उसकी आँखों के सामने,
उसका दोस्त मर सकता है-

"मैंने कुछ नहीं देखा,"
वो कहता है.
जो कुछ अच्छा है,
वह अपना दावा करता है,
वह बुरे को देखने में,
विफल रहता है.
वह घड़ी देखता है,
लेकिन यह नहीं बता सकता कि
यह कौन सा समय है.
नेक कुछ नहीं.

उनके विचारों,
और भावनाओं का दौरा करता है.
अक्सर वह इनकार करता है, कि
उसने कुछ देखा है.
हालांकि उसके पास,
वास्तव दृष्टी में है.

एक दृष्टिहीन व्यक्ति को,
अंधा होने की आवश्यकता नहीं है.

अंधा वह है,

जो देखना नहीं चाहता.

अगर तुम मुझसे पूछो तो,

ऐसे अज्ञानी मूर्ख की,

ज़िन्दगी अपने आप में एक कब्र है.

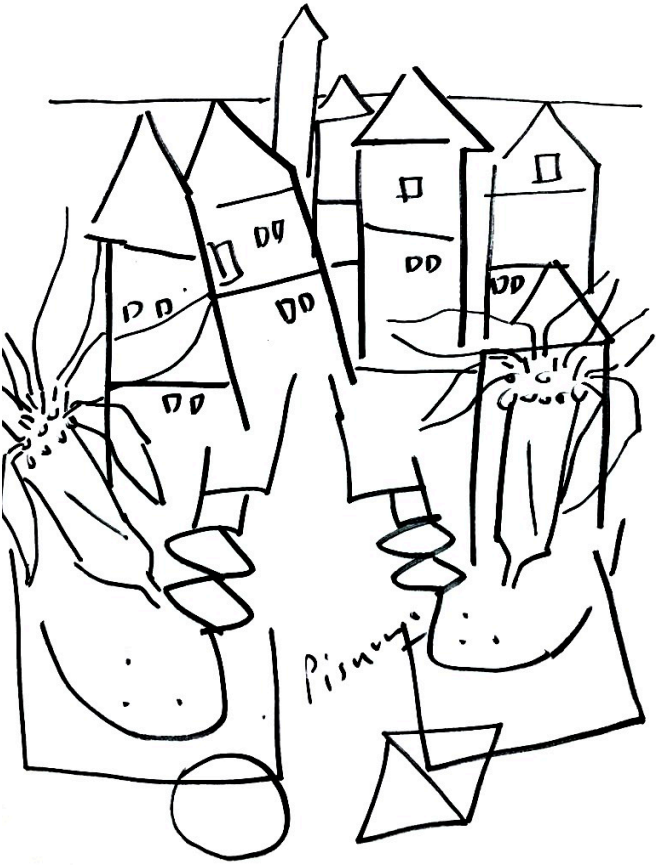

परी कथा जीवन

हालाँकि, तुम मेरी अपनी माँ हो,
मैं तुमसे बहुत परेशान हूँ माँ...
तुम ने मुझे,
महसूस करना,
और सोचना सिखाया,
लेकिन काश,
मैं भावना, और सोच से वंचित होता.

तुमने अपने बच्चे को देखना,
बोलना सिखाया.
लेकिन काश, मैं इस दुनिया में,
मूक-बधिर पैदा होता.
मेरा हाथ पकड़कर,
तुमने मुझे चलना सिखाया,
मैं दुनिया के कई देशों,
ओर,
इस देश के पचासों शहरों में, घूम आया.

अपने बच्चे को,
चलना और दौड़ना सिखाने के बजाय,
तुम्हें उसे सिखाना चाहिए था, कि
कैसे गिरना नहीं है...
विचार मेरे ऊपर,
परत दर परत चढ़ते जाते हैं.
उत्तर भी उद्यमशील, प्रश्न वर्जित.
जिंदगी अजीब है,
उनके लिए,
जो इसे जानते हैं.
लेकिन जो नहीं जानते,
उनके लिए,
तुम कहाँ हो ?
मेरी इकलौती माँ,
तुम कहाँ हो?

आइए !
मैं अपना सिर,
फिर से तुम्हारी गोद में,
रखना चाहता हूँ.

मुझे फिर से किस्से सुनाओ,
समय को रुक जाने दो.
मुझे देखने दो, कि
कैसे उन कहानियों के नायक,
दो सिरों वाले राक्षसों पर,
विजय प्राप्त करते हैं.
और कैसे वे जादूगरों से बचते हैं.
बताओ, शांति कहाँ है ?
यह हमारे घर में,
क्यों नहीं आएगी ?

मुझे कुछ मत कहो,
माँ, चुप रहो.
मैं तुम्हारे द्वारा बताई गई,
किंवदंतियों को नहीं समझ सकता.
मैंने दुनिया में,
ऐसे असली दिग्गज देखे हैं.
उन कहानियों के दैत्य तुलना में,
चूजों की तरह हैं.
मैंने ऐसे अज्ञानी और मूर्ख,

व्यक्तियों को देखा है,
जो सिर्फ दूसरों को खुश करने के लिए,
पांच सितारा होटलों,
और रिसॉर्ट्स पर बुलाते हैं.

मैंने ऐसी लोमड़ियों को देखा है,
जो पुकारती हैं.
उनकी बाँहों पर स्टील की जंजीरें हैं.
मैंने दंगाइयों को,
आराम करते देखा है,
अपने ही देशों में,
तोड़फोड़ करने के बाद.

मैंने ऐसे व्यापारियों को देखा है,
जिन्होंने कुछ पैसों के लिए,
अपनी मातृभूमि बेची है.
धार्मिक उपदेशकों को,
झूठे सपने दिखाते हुए,
साधारण तालियों के लिए.

मैंने देखा है बूढ़े इंसानों को,
नास्तिक, ईश्वरविहीन,
जो गुलाब को काँटा, और
काँटों को गुलाब कहते हैं.

मैंने नेताओं को देखा है,
क्रूर, निर्दयी.
अपने पितरों को श्राप देना,
दूसरों को प्रणाम करना.
जब से मैंने इस दुनिया को,
महसूस किया है,
और इसे जाना है,
जीवन मेरे लिए अपमान बन गया है.
परियों की कहानियों में,
दिखाई देने वाली भयानक चीजें,
मैंने इस दुनिया में,
असल जिंदगी में देखा है, माँ !

मुझे बताओ

तुम्हें कैसे पता चला ?
तुमने मुझे,
जो मसालेवाली चाय पिलाई,
वह तुम्हारे हाथ पर गिर गई.
और तुरन्त ही,
मेरी आंखों के सामने,
अँधेरा छा गया.
मैंने सोचा,
"कुछ हाथ जलते हैं,
और दूसरों के दिल जल रहे हैं"

जब मैंने तुम्हें,
अपनी अभिलाषा के विषय में,
बातें करते सुना.
तब मेरा दिमाग,
सारे जगत में दौड़ने लगा.
तुम्हें कैसे पता चला,
कि मेरे हृदय में,

आग लगी हुई है ?
कहो, प्रिये, बताओ, तुम्हें कैसे पता चला ?

तुमको उस दिन के पहले तक,
कभी शक नहीं हुआ.
कि जहाँ भी तुम जाओ,
मेरी आत्मा तुम्हारा पीछा करती है.
क्योंकि मैं, तुम्हें उस वसंत के दिन,
सर्दियों के बारे में नहीं बताऊंगा.
जो मेरे दिल को,
बर्फ में दफन कर रहा है.
अब मैं तुम्हारे सामने,
ऐसे खड़ा हो गया हूँ,
मानो एक मूर्छा-स्तिथि में हूँ.

कैसे प्यारी, कैसे
तुमने मेरी इच्छा प्रकट की ?
किस तरीके से, किस गुप्त नज़र से.
क्या तुम जानते हो कि,
मेरे दिल में, वास्तव में आग लगी थी ?

जैसे ही मैं तुम्हें देखता हूँ, या
तुम्हारे कदमों को सुनता हूँ,
पक्षियों के झुंड,
मेरे दिल में पंख लगाते हैं.
फिर मुझे बताओ,
तुम्हें कैसे पता चला कि,
मेरे सीने में वो सारा प्यार था ?

जिसने, मुझ जैसे प्रेमियों को सताया है ?
मुझे बताओ, प्यारी, मुझे बताओ,
तुम्हें कैसे पता चला कि,
मेरा दिल बहुत पहले से जल रहा था ?
मुझे बताओ, प्यारी, मुझे बताओ,
तुम्हें कैसे पता चला कि,
जहाँ भी तुम जाते हो,
मेरी आत्मा तुम्हारा पीछा करती है.

प्याज

प्याज ने,
अपनी त्वचा को देखा और सोचा,
और फिर मेरी ओर सिर घुमाया.
"सर्दी भीषण होगी"
"तुम्हें कैसे मालूम ?"
मैंने पूछ लिया.
"त्वचा से," उसने उत्तर दिया,
"यह मोटी है,
इसका मतलब है,
कि सर्दी कठोर होगी"

प्रकृति अपनी रचना से ही,
बुद्धिमान रही है,
यह सृष्टि नियमों का,
सामंजस्य है.
पहाड़ बनाने से पहले,
वह झरने लिए रास्ता चुनती है.

प्याज को,
सर्दी के मौसम के लिए,
सुसज्जित करने के लिए.
यह अपने लबादे को,
गर्म और मोटा बनाता है.
वाह ! क्या दया-भाव है.
क्या उदारता,
लेकिन अफसोस !
मुझे यह प्राप्त नहीं हुआ है.
क्या मैं तुम्हारा बच्चा नहीं हूँ.
बिल्कुल प्याज की तरह,
प्रकृति माँ ?

मैं भी ठंडा हूँ,
जब तूने मुझे बनाया तब,
तेरी दया कहाँ थी ?
आपदा, विपत्ति,
दुःख, दुर्भाग्य और दुर्दिन,
के बर्फ़ीले तूफ़ान में,
मैं ठंड से कांप रहा हूँ.

तुम ने प्याज की देखभाल की,

क्या मैं प्याज से कम कीमती हूँ ?

ये क्या विचार हैं ?

ये कष्ट क्या हैं ?

तुम ने मुझे एक दिल दिया,

लेकिन हजारों पीड़ाएं,

साथ मैं, क्यों ?

एक पल के लिए ही.....

अगर मैं, पहाड़ की शिखा पर,
उड़ान में एक उकाब होता.
मुझे अपनी ऊंचाइयों को,
छोड़ देना चाहिए.
अपने एकमात्र घोंसले के रूप में.
तुम्हारे पास उड़ना चाहिए.
अगर खुशियों से भरा,
हमारा मिलन होता.
मेरा सिर, सिर्फ तुम्हारे घुटने पर होता,
तो क्या मैं आराम करना चाहता ?
अगर मैं विदा हो जाऊं, तो तेज हवा के साथ,
मैं तुम्हारे चारों ओर, झपट्टा मारूंगा,
जैसे एक बवंडर होना चाहिए.
और क्या मैं एक उल्का पिंड की तरह,
धरती पर गिर जाऊं,
तुम्हारे लिए, मैं धधकना शुरू कर दूं ...
जब तक कि,
मैं धूल में न मिल जाऊं.

मैं, वैसा ही हूँ

मैं वैसा ही हूँ,
जैसा मैं था.
जैसा कि पहले,
तुम्हारे लिए सच था.
कभी ना भटका मेरा प्यार.

मैं तो वही हूँ,
जो मैं था,
दिल ने अपने भीतर की दुनिया को.
बरकरार रखा है.
तुम्हारे लिए चिंता,
कोमल सम्मान,
और प्यार की.
निरंतरता.

मैं वही हूँ,
जो मैं था.
मेरी हंसी पूरे कमरे में दौड़ती है,

अस्तित्व भी.
एक प्यार भरे गीत का,
और सपनों का.
उन लोगों की तुलना में,
अधिक उत्साही.
जो मैंने तुम्हें बताया था,
सहन किया,
तुम्हारे लिए अज्ञात,
विदाई का दर्द, ग़म....

मैं वही हूँ,
जो मैं अपरिवर्तित था.
कोमलता में,
कविता के प्रति.
मेरे प्रेम को नहीं बदला.
कवि के लिए सम्मान.
डायरी- मेरा खजाना धरती पर,
मेरा उपहार तुम्हें.
मैं पूरी तरह से अपरिवर्तित हूँ.

मैं वही हूँ,
जो मैं था.
और यहां तक, कि
क्या मैं फिर से पैदा हुआ था.
सब एक जैसे.
मैं कल की तरह जाऊंगा,
और आज की तरह आता रहुँगा.
जीवन में सबसे प्रिय,
तुम, खुद जानते हो, कि
मैं किस तरह से बदल गया हूँ.

चेहरे पर झुर्रियां,
और अधिक दिखाई दे रही हैं,
रात में नींद मेरे पास नहीं आती,
दिल की धड़कन की गति,
कभी धीमी, कभी तेज.
बालों में सफेदी ज्यादा आ गयी है.
और मेरे रूप चला गया है.

तुम मुझे याद रखोगे

एक बार तुमने मुझसे कहा था,
तुम मुझे भूल जाओगे.
मुझे भूल जाओ,
मुझे किसी तरह भूल जाओ.
कोशिश करो,
हो सके तो मुझे भूल जाओ.

हर मुलाकात के साथ,
मैंने तुम्हें एक फूल दिया था.
जब भी कोई फूल दिखेगा,
बगीचे में या बाजार में,
तुम मुझे याद करोगे.

तुम्हारे बगल में,
तुम्हारे दोस्त हो सकते हैं.
बैठक या रास्ते में,
लेकिन मुझ जैसे नहीं,
तुम मुझे याद रखोगे.

जब बालों में तुम कंघी करोगे,
तुम्हारी उंगलियाँ काँपेंगी,
एक बार मैंने,
उन्हें तुम्हारे लिए कंघी की थी.
तुम्हारे बाल तुम्हें याद दिलाएंगे,
तुम मुझे याद करोगे.

अगर शाम को
तुम रास्ते में टहलते हो,
तुम्हारा इंतज़ार कौन करेगा ?
तुम्हें घर की ओर,
कौन छोड़ने आएगा ?
तुम मुझे याद रखोगे.

अगर किसी अंतिम संस्कार में,
सभी काले कपड़ों में,
कोई पूछेगा वह कौन था?
तुम याद नहीं रख सकते,
पर, तुम मुझे याद करोगे.

एक बार तुमने मुझसे कहा था,
तुम मुझे भूल जाओगे.
मुझे भूल जाओ,
मुझे किसी तरह भूल जाओ.
कोशिश करो,
हो सके तो मुझे भूल जाओ.

मैं प्यार करता हूँ

घटाटोप अँधेरा मुझे पसंद है.
क्योंकि,
यह सूर्य को जन्म देगा.
निश्चित रूप से सूर्य.

कठोर सर्दी से मैं प्यार करता हूँ,
यह निश्चित रूप से गर्मी,
गर्म गर्मी को जन्म देगा.

नफरत का चरमोत्कर्ष,
मैं तुमसे प्यार करता हूँ,
यह प्रेम को जन्म देगा,
प्रेम अवश्य है !

अत्याचार का दर्द मुझे पसंद है,
यह न्याय को जन्म देगा,
सच्चा, पक्का!
निष्पक्ष न्याय.

आकाश पत्थर नहीं पकड़ सकता

अरे यार, आसमान में पत्थर क्यों फेंक रहे हो ?
आसमान पत्थर नहीं पकड़ सकता.

मेरे मित्र, तुम्हारे सिर को क्या हुआ ?
तुम्हारे बाल किसने काटे ?
तुम्हें यह मजाकिया रूप किसने दिया ?
अरे यार, आसमान में पत्थर क्यों फेंक रहे हो ?

तुम्हारी पैंट और जैकेट तुमसे बड़ी है,
आसमान तुम्हारी आँखों से बड़ा है.
मुझे तुम पर दया आ रही है.
कुछ देर के लिए,
आकाश पत्थरों को थामे रहेगा,
पत्थरों को हाथ में लेकर.

आकाश वर्षों तक तुम्हारी परीक्षा लेगा,
आकाश उन पत्थरों को रखेगा.
जब तक तुम्हारे सिर पर बाल,

वापस न आ जाएं.
तुम्हारी साफ आंखें धुंधली न हो जाएं.
जो तुम्हारे पास है वह तुम खो दोगे.
जो तुम्हारे पास है वही पहनोगे.
तुम बड़े हो जाओगे, मेरे मित्र.

जैसे-जैसे तुम बड़े होते जाओगे,
तुम्हारी आंखें बड़ी होती जाएंगी.
तुम्हारी आंखों में आंसू आ जाएंगे.
तुम्हारे हाथ बड़े हो जाएंगे.
जैसे तुम बड़े हो जाओगे,
पत्थर भी बड़े हो जाएंगे.
जिन्हें तुमने आकाश में उछाला है.

भाग्य तुम पर मुस्कुराया तो,
अगर तुम्हारी मृत्यु
थोड़ी देर से होती है, तो
तुम पृथ्वी पर,
उन पत्थरों से घर बना सकते थे.
अगर तुम्हारा जीवन,

एक इंद्रधनुष की तरह होता,

तो तुम्हें उसका हर रंग,

थोड़ा - थोड़ा सा मिल जाएगा.

जब तुम्हारी कब्र धरती पर खोदी जाएगी,

हो सकता है कि तुम्हारे कब्र का पत्थर,

आसमान से नीचे आ जाए.

आसमान में पत्थर नहीं है.

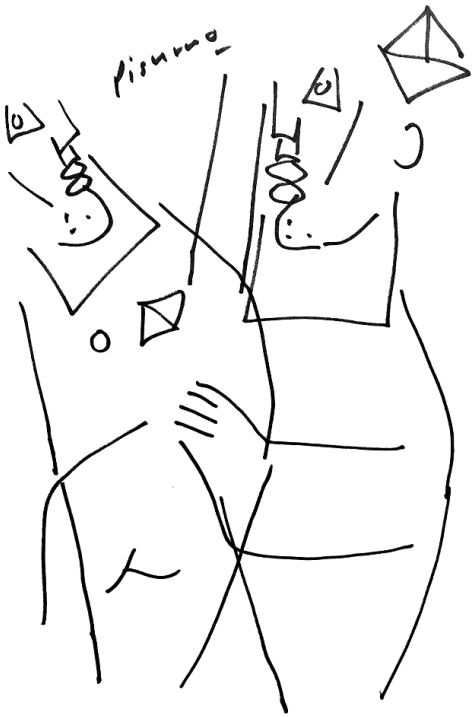

एक और मौका

मैंने तुमसे कहा था, कि
मैं तुमसे प्यार करता हूँ.
तुमने मेरा दिल तोड़ दिया.
लेकिन, फिर मैंने तुमसे कहा था, कि
मैं तुमसे प्यार करता हूँ.

मैंने तुमसे, मुझे माफ करने के लिए कहा,
तुमने मुझे तिरस्कृत कर दिया.
लेकिन, फिर मैंने तुमसे.
मुझे माफ करने के लिए कहा.
मैंने तुमसे कहा था, कि मुझे मत भूलना,
तुमने हमारी यादें भी तोड़ दीं.

लेकिन, फिर मैंने तुमसे कहा, कि मुझे मत भूलना.
मैंने तुम्हें अपना जीवन दिया,
लेकिन तुमने मुझे छोड़ दिया.
अब, मैं तुम्हें,
एक और मौका कैसे दूं ?

क्या तुम्हें याद है

क्या तुम्हें याद है ?
एक लड़का था.
जो जिंदगी भर सपनों में रहा,
और उसका अदम्य दिल,
तुम्हारे सामने होने भर से,
उत्साहित था.

क्या तुम्हें याद है ?
एक लड़का था.
कागज की नावों को,
सबकी विस्मयकारी दृष्टि से दूर,
कीचड़ भरे नदी के किनारे,
बहा देता था.

क्या तुम्हें याद है ?
एक लड़का था.
जो एक बड़े जहाज में,
नौकायन कर रहा था.

बहुत दूर, समुन्द्र के पानी में,
उसके सारे सपने डूब गए.

क्या तुम्हें याद है ?
एक लड़का था.
तुम्हारी फूल सी सुंदरता के लिए,
एक मीठी कोकिला
के स्वर में गाते हुए,
नदी के किनारे खड़ा रहता था.

क्या तुम्हें याद है ?
एक लड़का था.
एक दिन,
वो सबकी नज़रों से,
ओझल हो गया.
और तुम्हारी आँखों में आँसू थे.

क्या तुम्हें याद है ?
एक लड़का था.
जो निर्जल नदी के किनारे बैठा था.

कागज के विमान बनाता,
नीले आसमान में तुम्हारे साथ,
ऊंची उड़ान भरने के लिए.

क्या तुम्हें याद है ?
एक लड़का था.
हालाँकि उसकी आँखों में,
खुशी दिख रही थी.
उसका कराहता हुआ दिल,
व्यर्थ के सपनों में टूट गया.
और नीले आसमान में विमान थे.

मैंने तुम्हें कहाँ खो दिया

मैं उदासी से भरा हूँ,
लेकिन तुम्हें,
इसके बारे में बताने से क्या फायदा ?
प्रिय, मुझे नहीं पता कि मैंने तुम्हें कहाँ खो दिया ?
तुम्हारे सीने में जो दर्द है,
मैं उसे सह नहीं सकता.
मैं तुम्हारा सपना सच नहीं कर सकता.
मैं कई सालों से,
तुम से मिलने नहीं आ सकता.
प्रिय मुझे नहीं पता कि,
मैंने तुम्हें कहाँ खो दिया, प्रिय !
एक बार फिर तुम्हारे चहरे पर,
कोहरा छाया हुआ है.
बेशक एक दिन फूल खिलेगा.
तब मेरे दिल से दुख और
उदासी उड़ जाएगी.
मुझे नहीं पता कि
मैंने तुम्हें कहाँ खो दिया, प्रिय !

आज हमें अपनी किस्मत वापस लेनी है.
भगवान, कृपया हमें इस वसंत में,
अपनी प्रिय देखने दें.
आइए हम जल्द ही इसके आंसू पोंछ दें.
मुझे नहीं पता कि
मैंने तुम्हें कहाँ खो दिया, प्रिय !

अगर तुम सिर्फ इतना जानते हो, कि
मैं तुमसे कितना प्यार करता हूँ,
तो मैं तुमसे फिर मिलने आ रहा हूँ.
मेरी प्रिय, मैं तुम्हारे बिना मर रहा हूँ.
मुझे नहीं पता कि
मैंने तुम्हें कहाँ खो दिया, प्रिय !

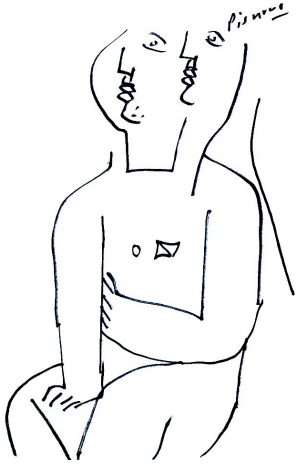

आपातकाल

(१८ महीने का समय १९७५ से १९७७)

मेरे एक मित्र थे,
वीर रस के प्रमुख कवि.
जिनके गीतों से कभी,
मातृभूमि की महक आती थी.
हम दोनों ने कभी,
जो मधुर गीत रचे थे.
वे मुँह से मुँह तक जाते थे.

उसने कभी इसका,
उल्लेख नहीं किया था.
लेकिन मुझे पता था, कि
उसे कुछ साल पहले,
गिरफ्तार किया गया था.
लेकिन मुझे नहीं पता था, कि
उसकी गलती क्या थी.
मैंने उससे कभी नहीं पूछा,
न ही उसने बताया.

एक बार जब मेरे मित्र,
मुझसे अपने जीवन की,
शिकायत कर रहे थे.
तो मुझे हृदय में,
भारीपन का अनुभव हुआ...
मैंने उससे पूछा,
“तुम्हें गिरफ्तार क्यों किया गया था ?”
अचानक, वह बम की तरह फट गया.

“क्या तुम नहीं जानते क्यों ?
क्योंकि मैंने दुनिया को श्राप दिया था.
मैंने "प्रधान मंत्री" को.
देश का शत्रु कहा था.”

तब जो कुछ उसने कहा था,
उससे वह डर गया,
और एक शब्द भी न सुनकर
अचानक रुक गया.
जाहिर है,
वह मुझसे डरता था,

यह सोचकर कि
मैं एक जासूस हो सकता हूँ.

"क्षमा करें,
मैं उत्साहित हो गया था,"
उसने अचानक कहा,
"कभी-कभी मुझे नहीं पता कि
मैं क्या कह रहा हूँ "

मुझे मेरे मित्र की आवाज़ में,
नम्रता महसूस हुई.
लेकिन एक तरह से,
उनका शक होना सही था.
मैंने उनकी हर बात का समर्थन किया.
ताकि उनकी शंकाओं को,
दूर किया जा सके...

मेरे मित्र के घर से,
अपने घर पहुंचने के बाद.
मैं सोचने लगा था,

भय और व्याकुलता ने,
मुझे चैन नहीं दिया.
मुझे हमारी बात याद आ गई...
मैंने अपने आप से कहा,
मूर्ख, तुम ने खुद को,
परेशानी में क्यों डाला ?
आखिर तुमने उसकी बातों का,
समर्थन क्यों किया ?
तुम कैसे जानते हो, कि
मेरे मित्र ने जानबूझकर,
उस तानाशाही के खिलाफ,
ये शब्द नहीं कहे थे ?

जब हजारों बेगुनाहों को,
जेल के अंदर डाल दिया गया.
और हजारों निर्वासित,
क्या वे किसी को आज़ाद करेंगे.

सरकार के नेता को,
"दुश्मन" किसने कहा है ?

आखिर इसमें तर्क कहां था ?
मुझे विश्वास नहीं हो रहा था, कि
उसके श्राप ईमानदार थे.
क्या होगा अगर वह जानबूझकर,
अपने जीवन के बारे में,
समय के बारे में,
शिकायत कर रहा था.

क्या होगा अगर,
वह मेरी राय लेने की,
कोशिश कर रहा था.
और मैंने क्या किया ?
मैं, मूर्ख महा मुर्ख हूँ.
मैंने जो सोचा था, उसे बताया,
उस रात मुझे नींद नहीं आई.
ख्यालों से मैं लड़ा...
मेरे पास क्या विचार थे.
जब वे मुझे कैद करने आएंगे,
तो वे मेरे अभिलेखागार की तलाशी लेंगे.
और फिर मेरे लेखन की.

मैंने सोचा कि मेरे पास क्या है ?
सफेद या काला !
एक अजनबी की तरह,
मैंने अपने अंदर झाँका.
फिर आधी रात को बिस्तर से उठा,
मेरी कविताओं की छानबीन करने लगा.
एक निरीक्षक की तरह.
मैंने उन कविताओं को देखा,
जो अभी भी अप्रकाशित हैं.
और मेरे ऊपर एक सिहरन छा गई.

"अगर वे ये पाते हैं,"
मैंने अपने आप से कहा,
"वह निरंकुश मुझे मार डालेंगे,"
शायद इन्हें जलाने के अलावा,
मेरे पास और कोई रास्ता नहीं है.
और क्या किया जा सकता है ?
आखिर कौन अपने जीवन के प्रति उदासीन है ?
कविताओं को जलाने में इतनी परेशानी ?
मेरी कवितायें,

सच्चाई और न्याय की मांग करती है !
मुझे अपने विचारों,
और भावनाओं का त्याग करना होगा.
बस अपना शेष जीवन जीने के लिए.
जलती हुई कविताओं की आग
और लौ से मेरा शरीर ठंडा हो गया.
मेरा दिल कांप गया.
लेकिन मैंने उनमें से,
कुछ को यह कहते हुए बख्शा,
"बस हो गया,"
यह कहते हुए कि,
"बस हो जाएगा".

मैंने उस दिन
अपनी कुछ कविताओं को बख्शा,
टूटे हुए कागज़ अभी बाकी हैं.
मैंने उन्हें भविष्य के लिए छुपाया,
मैंने उन्हें शौचालय के फ्लश टैंक में छिपा दिया.
मैंने अपने विचारों और निर्णयों को,
पृष्ठ दर पृष्ठ बदल दिया.

"जैसे ही भोर होगी
मैं उसके पास जाऊँगा.
मैं उससे कहूँगा, कि
वह मुझे धोखा न दे.
मैं उससे कहूँगा, कि
मैं कल झूठ बोल रहा था.
चलो इसे अपने बीच रखें,
तुम ने जो कहा था,
उसका समर्थन करने के लिए,
मैं सहमत हो रहा था.

दरअसल, मैं उस महान नेता
सम्माननीय प्रधान मंत्री से,
बहुत प्यार करता हूँ,
आदर करता हूँ.
उसने हमें ये खुशी के दिन दिए हैं.
वह इस दुनिया में हमारा एकमात्र सहारा है.
वह हमारा सोचने वाला दिमाग है.
हमारी देखने वाली आंख है.

"मैंने क्या गलती की है,"
सुबह तक यही सोचकर,
मैं खुद को दोषी मानता रहा.
जैसे ही भोर हुई,
मैंने उठकर कपड़े पहने.
इसी दौरान,
किसी ने दरवाजा खटखटाना शुरू किया...
इतनी सुबह कौन हो सकता है ?
मैं आईने के सामने खड़ा था.
मेरा शरीर कांप रहा था.
मुझमें दरवाजा खोलने की भी ताकत नहीं थी.
"उसने मुझे कल रात ही धोखा दिया होगा,
वे मुझे गिरफ्तार करने आ रहे हैं.

मैं कहाँ भागूँ?"
और दस्तक जारी रही . . .
दस्तक, दस्तक और दस्तक !
अपने लक्ष्य को प्राप्त किए बिना,
दस्तक बंद नहीं होगी...
"कौन है वहाँ ?"

"यह मैं हूँ, भाई"
यह मेरे मित्र की आवाज थी.

मेरे लिए वो काफी था,
शायद वह साक्षी बनकर आया था.
या मुझे चुप कराने आया था.
काँपते हाथों से मैं ने दरवाज़ा खोला.
वह मेरी गर्दन पर गिर पड़ा,
और मुझे गले से लगा लिया,
और फूट-फूट कर रोने लगा.
उसने एक उदास नज़र डाली,
बाईं ओर, फिर दाईं ओर.
जल्दबाजी में व्याख्या करने लगा.
एक दिन पहले हमारी बात हुई थी.

"मैं कल मज़ाक कर रहा था, सच में.
मैं उस प्रतिभाशाली नेता से प्यार करता हूँ.
वह इस दुनिया में हमारा एकमात्र सहारा है.
वह हमारा सोचने वाला दिमाग है.
हमारी देखने वाली आंख है "

मैं उसे समझ गया,

पर खामोश रहा...

उन तमाम व्याख्याओं के,

मिथ्यात्व का एहसास.

वक़्त ने हम सबको पाखंडी बना दिया था,

बात करने के एक दिन बाद,

हमने जो कुछ कहा था,

उससे इनकार करते हुए,

यह पता चला, कि

वह भी उस रात सोया नहीं था.

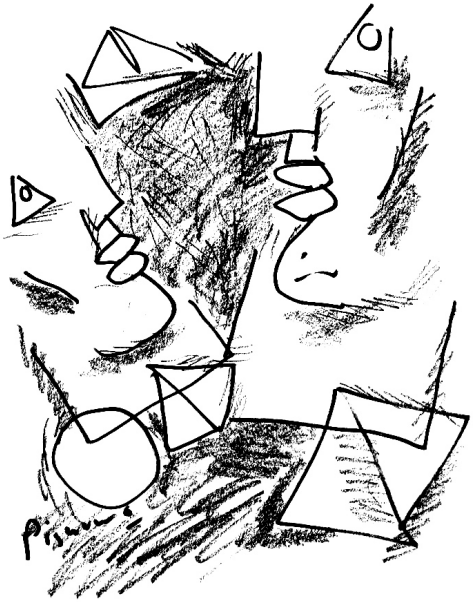

मेरी स्वतंत्रता

हर आदमी एक स्वतंत्र पार्टी है.
प्रत्येक व्यक्ति,
एक स्वतंत्र सरकार है.
मैं अपनी स्वतंत्रता
छीनने की अनुमति,
कभी नहीं दूंगा -
मेरे दिल और दिमाग पर,
कब्जा करने के लिए !
यह जान लो !
मैं अपनी आत्मा को,
गुलाम नहीं होने दूंगा.

घूमने फिरने के अवसरों के लिए,
समृद्ध होने के लिए,
दावत, शराब और जन्नत पर,
अपना जीवन,
बर्बाद करने के लिए.

मुझे स्वर्ग में,
अपने स्थान का लालच नहीं था.
जो बेवकूफों से भरा हुआ है.
न ही मुझे दौलत का लालच है,
झूठे पदकों से,
बेकार की मालाओं से,
सिर्फ मेरे दिल की आज़ादी के लिए.

इसी प्यार के साथ,
मैं इस संसार में आया था.
बस मेरे दिल की आज़ादी !
मेरे दिमाग की आज़ादी !

शायद तुम नदियों को रोक सकते हो,
लेकिन मैं समुद्र की तरह स्वतंत्र हूँ.
उन पर दया मत करो,
जो जुल्म करने वाले के आगे,
समर्पण कर देते हैं.
गरज के रूप में,
मूसलाधार बारिश,

और तूफान के रूप में,
मैं आंधी,
और चक्रवात की तरह मुक्त हूँ.
यह पृथ्वी मेरी है.
मैं पृथ्वी हूँ.
क्रोध से चक्कर लगा रहा हूँ.
मेरी आजादी मेरी ताकत है.

मेरी आज़ादी,
इन तथाकतित,
शरीफ लोगों के मुखोटों को,
बेनकाब करने और फाड़ने की है.
मेरी आज़ादी कायरों को,
उनके घरों से,
बाहर निकलने का इशारा कर रही है.

ऊपर विशाल आकाश देखें,
और ताजी हवा में सांस लें.
जिसकी उन्हें लालसा है.
दूधिया झील में,

लगातार प्रतिस्पर्धा करने वाले,
जो खुश नज़र आते हैं,
जो थोड़ी सी भी, चुनौती के अधीन होने पर,
डर से सिमट जाते हैं.

जो हर संभव मौके पर,
पद के लिए संघर्ष करता है.
क्या वो जीवित दास,
इस खुशी को समझ सकता हैं ?
अपनी अथाह शक्ति को समझें,
मेरी स्वतंत्रता मेरे दिल में बसी है.

मेरी मुट्ठी जितना बड़ा ?
आप चाहो तो,
मैं अपनी सारी दौलत दे दूँगा.
जो कुछ मेरे पास है, वो सब दे दूँगा.
मैं दे दूँगा "मेरे मुँह का स्वाद",
"मेरी आँखों की रोशनी",
लेकिन मैं अपनी निरंकुश,
स्वतंत्रता को कभी नहीं छोड़ूंगा.

प्रिय माँ

प्रिय माँ,
मैं तुम्हारा बहुत ऋणी हूँ,
तुमने मुझे यह सुंदर संसार दिया.
मैं अपनी जान का कर्जदार हूँ, माँ
प्रिय माँ,
मैं तुम्हारा बहुत ऋणी हूँ.
अगर मैं बड़ा होकर कवि बनूं,
मैं अपनी कविताएँ और कहानियाँ,
तुम्हें समर्पित करूँगा.
मैं तुम्हारे लिए अपना बलिदान दूंगा.
प्रिय माँ,
मैं तुम्हारा बहुत ऋणी हूँ.
माँ, तुमने मुझे नोटबुक और कलम दी.
जो मुझे खुद से ज्यादा प्यारी है.
"बस बैठो, उठो मत"
"बस पढ़ाई करो," तुम ने कहा
प्रिय माँ,
मैं तुम्हारा बहुत ऋणी हूँ.

आभार

पिसुरवो के रूप में जाने जाने वाले चित्रकार जितेंद्र सुरलकर की कलात्मक क्षमता बहुत कम उम्र में ही स्पष्ट हो गई थी. उनकी रचनात्मकता असाधारण है, और इस पुस्तक में उनके द्वारा बनाई गई रुचि और शैलियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। उनकी ये कलाकृतियां कवितायों को कहानी में खींचतीं है. जितेंद्र सुरलकर पिसुरवो एक प्रसिद्ध वरिष्ठ कलाकार हैं, जो मुंबई भारत से रहते हैं और वहीँ काम करते हैं.
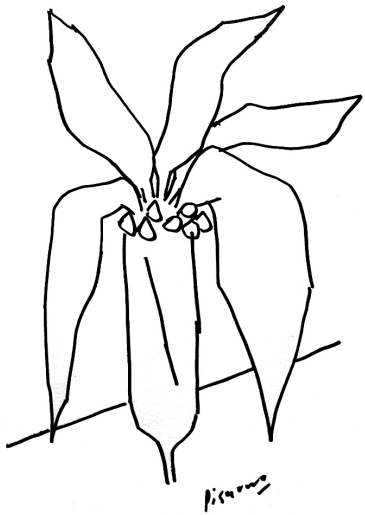
हम उनके इस सहयोग के लिए हृदय से आभारी हैं